हरिभूमि

महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि

रोहतक, रविवार, 29 जून 2025

11 सिहमा के शहीद जसवंत की 30वीं पुण्यतिथि पर दी श्रद्धांजलि

12 9 जुलाई की राष्ट्रव्यापी हड़ताल में भाग लेंगे कर्मचारी...

॥ तमसो मा ज्योतिर्गमय ॥
MR DEGREE COLLEGE
Affiliated to Indira Gandhi University, Meerpur (Rewari)
GET UPTO 100% SCHOLARSHIP
COURSE AVAILABLE
B.SC. (Medical) / B.SC. (Non-Medical)
B.A. / B.COM / M.SC. (Phy. & Chem.)
B.Ed. / JBT / D-PHARMA
ADMISSION OPEN
Session 2025-26
For Admission Visit College Campus
Bus Facility Available From All Routes
MITTERPURA (M/GARH) HRY.
9466886066, 9416903367, 9416903021
mrcollegemitterpura@gmail.com

बिजली निगम 310 किसानों को और देगा ट्यूबवेल कनेक्शन, वर्कऑडर जारी

- जिन किसानों ने वर्ष 2021 से लेकर 2023 तक ट्यूबवेल कनेक्शन के लिए फाइलें जमा करवाई हुई हैं और बिजली निगम को सहमति राशि, लागत राशि और मोटर बिल जमा करवा रखे हैं, केवल उन्हीं को दिए जा रहे हैं प्राथमिकता के आधार पर कनेक्शन

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

ट्यूबवेल कनेक्शन की इंतजार में बैठे किसानों के लिए खुशखबरी है। बिजली निगम ने अब 310 और किसानों के ट्यूबवेल कनेक्शन के लिए वर्क ऑर्डर जारी कर दिया। इस वर्क ऑर्डर के तहत अगले छह माह में ट्यूबवेल कनेक्शन चालू किए जाने हैं।

उल्लेखनीय है कि किसानों को बिजली निगम ट्यूबवेल कनेक्शन देने को तैयार है और इस प्रकिया को पूरी करने के लिए कनेक्शनों के वर्कऑडर भी समय-समय पर जारी किए जाते रहे हैं। सरकार ने जब ट्यूबवेलों के कनेक्शनों के आदेश पारित किए, तब जिला महेंद्रगढ़ यानि नारनौल सर्कल में कुल 2131 कनेक्शन होने पेंडिंग थे। सरकार द्वारा आदेश जारी करने के बाद जब वर्ष 2019 से 2021 के मध्य जिन किसानों ने ट्यूबवैल कनेक्शन के लिए आवेदन किया था, प्रथम चरण में उनके कनेक्शन किए जारी किए गए। जिस पर 2131 किसानों में से 1324 किसानों ने एस्टीमेट कॉस्ट जमा करवाई थी, जिनको अब ट्यूबवेल कनेक्शन जारी किए जा रहे हैं।

नारनौल। पॉवर हाउस। फोटो : हरिभूमि

इसी योजना के तहत नारनौल डिविजन में 186 और महेंद्रगढ़ डिविजन में 124 ट्यूबवेल कनेक्शन लगाए जाएंगे। फरवरी से अब तक पांच माह में बिजली निगम द्वारा ट्यूबवेल कनेक्शन के लिए यह तीसरा वर्क ऑर्डर जारी किया जाएगा। पहले जारी किए दो वर्क ऑर्डर के तहत जिलेभर में करीब 1400 से ज्यादा ट्यूबवेल कनेक्शन जारी किए जा चुके हैं। इसके तहत खेतों में बिजली के खंभे और तार लगाने का कार्य किया जा चुका है। अब केवल ट्रांसफार्मर और मीटर कनेक्शन का कार्य शेष है।

यहां लगेंगे इतने कनेक्शन

नारनौल डिविजन के अंतर्गत सिहमा में 75, नारनौल ग्रामीण में 50, अटेली में 28 तथा नांगल चौधरी में 33 किसानों को ट्यूबवेल कनेक्शन जारी किए जाने हैं। इसी प्रकार महेंद्रगढ़ डिविजन में महेंद्रगढ़ शहरी में 15, कनीना में 72, बुचावास में 35 तथा सतनाली में दो किसानों को ट्यूबवेल कनेक्शन जारी किए जाएंगे।

यह कहते हैं अधिकारी

किसानों को ट्यूबवेल कनेक्शन के लिए तीसरा वर्क ऑर्डर जारी कर दिया है। दो वर्क ऑर्डर पहले हो चुके हैं। इसलिए जिन किसनों ने ट्यूबवेल कनेक्शन के लिए आवेदन किया हुआ है, वे 13 जुलाई से पहले-पहले लागत राशि जमा करवा दें।

—जोगेंद्र हुड्डा, एसई, बिजली निगम, नारनौल

पहले छमाही में दिए जाते हैं कनेक्शन

बता दें कि एक वर्ष के कार्यकाल में पहली छहमाही के दौरान ही वर्क ऑर्डर जारी किया जाते हैं। यह छह महीनों में ट्यूबवेल कनेक्शन देने का कार्य किया जाता है। ट्यूबवेल कनेक्शन के लिए वर्क ऑर्डर जारी करने की प्रक्रिया इस वर्ष 13 जनवरी को शुरू की गई थी। इसलिए इस वर्ष 13 जुलाई तक ही वर्क ऑर्डर जारी किए जा सकते हैं। ट्यूबवेल कनेक्शन के लिए वर्क ऑर्डर केवल उन उपभोक्ताओं के लिए जारी किए जाते हैं, जिन्होंने कनेक्शन के आवेदन के बाद सहमति राशि, लागत राशि और मोटर बिल जमा करवा दिया है।

खबर संक्षेप

बाबा जाट वाला मंदिर सिहमा में रोट आज

मंडी अटेली। खंड सिहमा के बाबा जाट वाला मंदिर में आज 29 जून को रोट आयोजित किया जा रहा है। जानकारी देते हुए सरपंच सुमन देवी ने बताया कि जाट वाला मंदिर परिसर में सुबह प्रात सवा सात बजे हवन यज्ञ किया जाएगा। उसके बाद 10 बजे बाबा का प्रसाद वितरण किया जाएगा। इस रोट में आसपास के गांव से हजारों की संख्या में बाबा का प्रसाद ग्रहण करेंगे।

रिटायर्ड कर्मचारी संघ की बैठक एक को

नारनौल। रिटायर्ड कर्मचारी संघ हरियाणा संबंधित अखिल भारतीय राज्य पेंशनर्स फेडरेशन की बैठक एक जुलाई को यादव धर्मशाला में प्रातः 10 बजे आयोजित की जाएगी। इस अवसर पर राज्य प्रधान मास्टर वजीर सिंह, महासचिव रतन जिंदल नौ जुलाई की हड़ताल, 15 जुलाई को उपायुक्त कार्यालय पर रिटायर्ड कर्मचारी संघ के धरने की तैयारी के लिए बैठक को संबोधित करेंगे।

भाजपा को भारी पड़ सकती है अनदेखी, षड्यंत्र पूर्वक नामकरण बदलने के आरोप

सीएम को 55 पंचायतों ने लिखा पत्र, मेडिकल कॉलेज का नामकरण शहीद राव तुलाराम करने की मांग

- शहीद राव तुलाराम के नामकरण की शर्त पर पंचायत ने 80 एकड़ जमीन स्वास्थ्य विभाग के नाम कराई रजिस्ट्री

हरिभूमि न्यूज ⏭ नांगल चौधरी

जिले में एक मेडिकल कॉलेज की स्वीकृति होने पर सबसे पहले गांव कोरियावास पंचायत ने स्वास्थ्य विभाग को जमीन मुहैया कराने का प्रस्ताव दिया था। साइट को मंजूरी मिलने पर पंचायत ने विभाग के नाम करीब 80 एकड़ जमीन की रजिस्ट्री करवा दी, साथ कॉलेज का नामकरण शहीद राव तुलाराम करने की गुहार लगाई थी, लेकिन राजनीतिक षड्यंत्र पूर्वक नामकरण की प्रक्रिया में पंचायती प्रस्ताव की अनदेखी कर दी। जिससे आक्रोशित ग्रामीण लगभग दो महीने से धरने पर बैठे हैं। नांगल चौधरी हलके की 55 पंचायतों ने सीएम को प्रस्ताव भेजकर शहीद को प्राथमिकता देने की मांग की है। पंचायतों की अनदेखी करना भाजपा के लिए घाटे का सौदा साबित हो सकता है।

धरने पर बैठे सरपंच के प्रतिनिधि नोनिहाल सिंह व अन्य ग्रामीणों ने बताया कि स्वतंत्रता संग्राम की नींव 1857 में रखी गई थी। जिसमें राव तुलाराम के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता, जिन्होंने नारनौल के पास नसीबपुर मैदान में 5000 सैनिकों से साथ अंग्रेजों से लोहा लिया था। संग्राम में कई अंग्रेजी अधिकारियों को मारकर पांच हजार लड़ाकूओं के साथ शहीद हुए थे। बावजूद उनके नाम से प्रदेश में किसी भी बड़ी संस्था का नामकरण नहीं हुआ। यहां तक नसीबपुर में शहीद स्मारक के सौंदर्यीकरण में भी निम्न स्तर की राजनीति होती है। सरकार की योजना के मुताबिक जिले में एक मेडिकल कॉलेज स्वीकृत किया गया था, लेकिन जमीन उपलब्ध नहीं होने के कारण निर्माण प्रक्रिया शुरू नहीं हुई। उस दौरान कोरियावास पंचायत ने स्वास्थ्य विभाग को निःशुल्क जमीन देने का प्रस्ताव भेजा था। जिसमें मेडिकल कॉलेज का नामकरण शहीद राव तुलाराम करने की मांग रखी थी। शिलान्यास समारोह में नारनौल के विधायक ओमप्रकाश यादव ने भी मुख्यमंत्री को कॉलेज का नामकरण शहीद राव तुलाराम करने का सुझाव दिया था।

सरकार ने शहीद के नाम को तव्वजो नहीं दी और ढोसी के पर्वत पर तपस्वी महर्षि च्यवन नामकरण कर दिया। जिससे आक्रोशित 65 गांवों के प्रतिनिधि धरने पर बैठे हुए हैं। बीते दिनों नांगल चौधरी हलके की 55 पंचायतों ने प्रस्ताव पारित करके सरकार को प्रेषित किया है। जिसमें कॉलेज के नामकरण को बदलने की गुहार लगाई है, लेकिन अभी तक सरकार की तरफ से कोई प्रतिक्रिया नहीं आने से अहीरवाल में विरोध की चिंगारी सुलगनी आरंभ हो गई है।

नांगल चौधरी। मेडिकल कॉलेज के सामने धरने पर बैठकर शहीद राव तुलाराम नामकरण करने की मांग करते ग्रामीण व शहीद राव तुलाराम के नामकरण की मांग को लेकर प्रदर्शन करती पंचायतें। फोटो : हरिभूमि

नामकरण में दानदाता को प्राथमिकता मिलने की परंपरा

धरने के संयोजक विकास यादव बड़कोदा ने बताया कि नांगल चौधरी में समाजसेवी चौधरी बैजनाथ ने करीब 15 करोड़ रुपये की लागत से निर्माण कराया था। इसके बदले उन्होंने कॉलेज का नामकरण अपने नाम से कराया। करीब तीन करोड़ की लागत मैटरनिटी अस्पताल का निर्माण कराया गया, जिसका नामकरण भी स्वयं के नाम से कराया गया। मेडिकल कॉलेज में भी निःशुल्क जमीन लेकर एक विंग का निर्माण कराया जा रहा है, इसका नामकरण भी समाजसेवी के नाम से होने की सूचना है। हजारों करोड़ की जमीन निःशुल्क दान करने के बावजूद कोरियावास पंचायत के प्रस्ताव को प्राथमिकता नहीं मिलना उचित नहीं।

सड़क हादसे में सात वर्षीय बच्चे की मौत

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

सड़क हादसे में सात वर्षीय बच्चे की मौत हो गई। बच्चे को एक तेज रफ्तार बाइक ने टक्कर मारी हैं। हादसे के बाद बाइक सवार मौके से फरार हो गया। पुलिस ने बच्चे के पिता के बयान पर केस दर्ज किया है। शव को पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया गया है। बच्चे की मौत से परिवार में मातम पसरा है। गांव माजरा कलां निवासी कर्ण सिंह ने पुलिस में दिए बताया में बताया कि शुक्रवार उसकी पत्नी व उसका सात वर्षीय बेटा कार्तिक अपनी मां के साथ घर से खेत के लिए निकला था। जब वे गांव से बाहर सेहलंग-महेंद्रगढ रोड पर बिजली पावर हाउस के पास पहुंचे। तब महेंद्रगढ़ की तरफ से एक बाइक चालक अपनी बाइक को लापरवाही से चलता हुआ आया। उनको टक्कर मार दी और सेहलंग की तरफ मोटरसाइकिल को लेकर भाग गया। परिजनों से तुरंत महेंद्रगढ़ के एक निजी अस्पताल में लेकर आएं। जहां पर जांच के बाद डॉक्टर ने घायल को हायर सेंटर रेफर कर दिया। परिजन उसे नागरिक अस्पताल महेंद्रगढ़ लेकर आएं। जहां पर जांच के दौरान डॉक्टरों ने कार्तिक को मृत घोषित कर दिया। पुलिस शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम करवा परिजनों को सौंप दिया। उन्होंने कहा कि आरोपी मोटरसाइकिल ड्राइवर पर कानूनी कार्रवाई की जाए।

अज्ञात वाहन ने बाइक को मारी टक्कर, एक की मौत

महेंद्रगढ़। सतनाली-नावां रोड पर अज्ञात वाहन ने बाइक सवार को टक्कर मार दी। हादसे में बाइक सवार व्यक्ति की मौत हो गई है। सतनाली पुलिस ने शव का पोस्टमॉर्टम करवाकर परिजनों को सौंप दिया है। मृतक की पत्नी के बयान पर पुलिस ने अज्ञात ड्राइवर के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। गांव खेड़ी फिलहाल सतनाली निवासी पूजा ने पुलिस में दिए बयान में बताया कि उसका 42 वर्षीय पति नरेश हलवाई का काम करता था। शुक्रवार देर शाम वह सतनाली से बाइक पर अपने गांव खेड़ी गया था। वह अपने गांव खेड़ी से वापस सतनाली आ रहा था। सतनाली व नावां के बीच अज्ञात वाहन ने उसकी बाइक को टक्कर मार दी, जिससे वह घायल हो गया।

पेड़ पर फंदा लगाकर व्यक्ति ने की आत्महत्या

नारनौल। उपमंडल के गांव बलाहा कलां में करीब 42 वर्षीय एक व्यक्ति ने पेड़ पर फंदा लगाकर मौत को गले लगा लिया। प्रातःकाल को खेतों में लोगों ने पेड़ पर शव लटका देख इसकी सूचना पुलिस को दी। गहली पुलिस ने मौके पर पहुंच आवश्यक कार्रवाई शुरू की।

जानकारी के अनुसार गांव बलाहा कलां निवासी करीब 42 वर्षीय राजेंद्र सिंह ने एक बाजरे के खेत में जाकर नीम के पेड़ से फंदा लगा लिया और आत्महत्या कर ली। सवेरे जब लोगों ने पेड़ पर शव लटका देखा तो करीब सुबह सात बजे पुलिस को सूचना दी। सूचना के आधार पर गहली पुलिस मौके पर पहुंची और आवश्यक कार्रवाई शुरू की। शव की पहचान राजेंद्र सिंह के रूप में होने पर परिजनों के बयान पर कानूनी कार्रवाई की गई। फिलहाल राजेंद्र की आत्महत्या के कारण अज्ञात हैं तथा उसके पास से कोई सुसाइड नोट भी नहीं मिला है। मृतक अपने पीछे दो बच्चे छोड़ गया है, जिसमें से एक की आयु करीब 13 वर्ष और दूसरा उससे छोटा है। पुलिस ने आवश्यक कार्रवाई करने उपरांत शव का नागरिक अस्पताल नारनौल से पोस्टमार्टम कराया तथा उसे परिजनों को सौंप दिया।

स्वर्ण व्यापारियों को राजस्थान पुलिस ले जा रही उठाकर, एसपी से रोकने की मांग

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

सर्राफा एसोसिएशन व मैढ़ क्षत्रिय स्वर्णकार सभा ने राजस्थान पुलिस द्वारा स्थानीय पुलिस को बिना सूचित किए यहां के स्वर्ण व्यापारियों को उठाकर ले जाने बारे पुलिस अधीक्षक पूजा वशिष्ठ को एक ज्ञापन सौंपा तथा स्वर्ण व्यापारियों पर हो रहे इस जुल्म को रोकने की मांग की।

नारनौल सर्राफा एसोसिएशन के प्रधान सुरेंद्र सोनी, मैढ़ क्षत्रिय स्वर्णकार सभा के प्रधान राजेंद्र प्रसाद सोनी व राष्ट्रीय स्वर्णकार राजनीतिक भागीदारी मंच जिला महेंद्रगढ़ के प्रधान शंकर लाल सोनी ने बताया कि राजस्थान की पुलिस बिना स्थानीय पुलिस स्टेशन को सूचित किए हुए यहां के व्यापारियों को उठाकर ले जाती है, जो की कानून के लिहाज से पूरी तरह गलत है। सभी स्वर्णकार समाज एवं सर्राफा एसोसिएशन के सदस्य व्यापारियों ने पुलिस अधीक्षक से मांग करते हुए कहा कि वे स्वयं सुनिश्चित कराएं कि जब किसी अन्य राज्य की पुलिस शहर में आती है तो वह स्थानीय पुलिस स्टेशन में सूचित करें और यहां की पुलिस को अपने साथ लेकर आए। उसके बाद ही वह अपनी कार्रवाई करें। उन्होंने मांग करते हुए कहा कि पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व में स्थानीय पुलिस सुनिश्चित करे, उसके बाद ही अन्य राज्य की पुलिस यहां के व्यापारियों को पूछताछ के लिए अपने साथ लेकर जाए। पुलिस अधीक्षक ने सभी सर्राफा व्यापारी एवं स्वर्णकार समाज के लोगों की बातों को पूरे ध्यान से सुना और उन्हें विश्वास दिलाया कि वे इसके ऊपर आगे से इस पर पूरी तरह अमल कराने की कोशिश करेंगी। इस मौके पर पूर्व पार्षद एवं ग्रीवेंस कमेटी के पूर्व सदस्य दयानंद सोनी, प्रधान सर्राफा एसोसिएशन सुरेंद्र सोनी, प्रधान स्वर्णकार समाज राजेंद्र प्रसाद सोनी, जिला अध्यक्ष शंकरलाल सोनी, उपप्रधान सर्राफा एसो. भारत जोहरी, कुणाल सोनी, नंदलाल सोनी, मोतीराम सोनी, जोनी सोनी, लख्मीराम सोनी, सचिव कैलाश चंद सोनी आदि मौजूद थे।

नारनौल। पुलिस अधीक्षक पूजा वशिष्ठ को ज्ञापन सौंपते स्वर्णकार समाज के लोग। फोटो : हरिभूमि

एमए पत्रकारिता एवं जनसंचार में दाखिले के लिए 30 जून तक कर सकते हैं पंजीकरण

मीडिया व मनोरंजन उद्योग के क्षेत्र में करियर के लिए लांच पैड है पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

मीडिया एवं मनोरंजन उद्योग के क्षेत्र में करियर बनाने की चाह रखने वाले विद्यार्थी हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग में 30 जून तक दाखिले के लिए आनलाइन पंजीकरण करवा सकते हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. टंकेशवर कुमार ने बताया कि जो विद्यार्थी डिजिटल मीडिया, जनसंपर्क, विज्ञापन, फिल्म, कॉरपोरेट कम्युनिकेशन, एआई एवं मीडिया, टेलिविजन, रेडियो, डिजिटल एवं फिल्म उद्योग में कॅरियर बनाना चाहते हैं, वे हकेंवि के पत्रकारिता एवं जनंसचार विभाग से जुड़ सकते हैं। विश्वविद्यालय में पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार ने कहा कि श्रेष्ठ मानव व मीडिया उद्योग के लिए मानव संसाधन ही विभाग का उदेश्य है। उन्होंने बताया कि वर्तमान में विभाग में नियमित एमए जनसंचार, पीएचडी जनसंचार के साथ-साथ दूरवर्ती शिक्षा के अंतर्गत भी विभाग एमए जनसंचार पाठ्यक्रम उपलब्ध है। मीडिया उद्योग के लिए श्रेष्ठ मानव संसाधन विभाग में तैयार हो इसके लिए विश्वविद्यालय की और से निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि मीडिया के विद्यार्थियों को मीडिया उद्योग का व्यवहारिक प्रशिक्षण विद्यार्थियों को मिले इसके लिए विभाग में नियमित रूप में टेलिविजन कार्यक्रम निर्माण, समाचार पत्र निर्माण, रेडियो कार्यक्रम निर्माण, डिजिटल एवं सोशल मीडिया कंटेंट निर्माण का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। विभाग के विद्यार्थी हर सप्ताह बहुभाषी पॉजिटिव न्यूज टेलिविजन बुलेटिन, सीयूएच स्टूडेंट लैब जर्नल व सीयूएच स्टूडेंटस जर्नलिस्ट नाम से अपना ब्लॉग चला रहे हैं।

विभाग के प्रोफेसर आफ प्रेक्टिस प्रकाश ने कहा कि जो विद्यार्थी फिल्म निर्माण की बारीकियों को सीखना चाहता है वे हरियाणा केंद्रीय विद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग को चुन सकते हैं। उन्होंने बताया कि विभाग में फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी एवं वीडियो संपादन के लिए कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। दाखिले के इच्छुक अभ्यर्थी पंजीकरण कर सकते हैं। विस्तृत विवरण व जानकारी विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

हकेंवि भवन

विभाग दूसरे व चौथे समेस्टर में विद्यार्थियों को इंटरनशिप करता है ऑफर

विभागाध्यक्ष डॉ अशोक कुमार ने बताया कि विभाग दूसरे व चौथे समेस्टर में विद्यार्थियों को इंटरनशिप आफर करता है जिसके कारण विद्यार्थियों को सीधे मीडिया उद्योग से जुड़ने का अवसर मिलता है। वर्तमान में विभाग के 100 से अधिक विद्यार्थी मीडिया के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं।

स्मॉलकैप कंपनियां फिर उड़ान भरने को तैयार, दे सकती है अच्छा मुनाफा

- लंबी अवधि के निवेश का लक्ष्य बनाकर लगाएं पैसा
- पिछले माह निफ्टी स्मॉलकैप 100 में 14.7% में तेजी
- अब स्मॉलकैप में निवेश का हो सकता है सही वक्त
- 74% स्मॉलकैप कंपनियों की ऑपरेशनल एफिशिएंसी बेहतर

स्मॉलकैप कंपनियां वे होती हैं जिनका मार्केट कैपिटलाइजेशन कम होता है, आमतौर पर ये नए या छोटे व्यवसाय होते हैं, जिनमें विकास की गुंजाइश अधिक होती है, लेकिन जोखिम भी अधिक होता है। सेबी के अनुसार, स्मॉलकैप कंपनियां वे होती हैं जो मार्केट कैपिटलाइजेशन के मामले में 251वें स्थान से नीचे आती हैं।

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

बाजार के परिदृश्य को देखते हुए स्मॉलकैप कंपनियां एक बार फिर उड़ान भरने के लिए तैयार हैं। ये कंपनियां लंबी अवधि में निवेशकों को अच्छा मुनाफा दे सकती हैं। जो लोगों को मालामाल कर देगीं। एक रिपोर्ट के मुताबिक पिछले महीने भारतीय शेयर बाजार में स्मॉलकैप शेयरों ने जबरदस्त तेजी दिखाई, जबकि निफ्टी 50 केवल मामूली बढ़ा। मार्च तिमाही के नतीजों से पता चला कि 74% स्मॉलकैप कंपनियों की ऑपरेशनल एफिशिएंसी बेहतर हुई है। 'चाइना प्लस वन' स्ट्रेटजी से भी स्मॉलकैप कंपनियों को नई उड़ान मिल रही है, जो लंबी अवधि के निवेशकों के लिए सुनहरा मौका है। पिछला महीना भारत की अर्थव्यवस्था के लिए काफी अच्छा रहा। वैश्विक चुनौतियों और सीमा-पार तनावों के बावजूद मई महीने में भारतीय शेयर बाजारों ने तेज रिकवरी दिखाई। शेयर बाजारों में जहां एक ओर लार्जकैप इंडेक्स सीमित दायरे में घूमते रहे, वहीं असली हलचल स्मॉलकैप शेयरों में दिखी। ये छोटी कंपनियां उन निवेशकों के लिए सुनहरा मौका बन रही हैं, जो लंबी अवधि के लिए पोर्टफोलियो बनाना चाहते हैं।

स्मॉलकैप कंपनियों की विशेषताएं

- **उच्च जोखिम और उच्च रिटर्न :** स्मॉलकैप कंपनियों में निवेश करने से उच्च रिटर्न मिल सकता है, लेकिन जोखिम भी अधिक होता है क्योंकि इन कंपनियों का भविष्य अनिश्चित हो सकता है।
- **नए और छोटे व्यवसाय :** स्मॉलकैप कंपनियां अक्सर नए और छोटे व्यवसाय होते हैं जो अपने उत्पादों या सेवाओं को बाजार में स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं।
- **विकास की गुंजाइश :** स्मॉलकैप कंपनियों में विकास की गुंजाइश अधिक होती है, जिससे निवेशकों को आकर्षित किया जा सकता है।
- **कम तरलता :** स्मॉलकैप कंपनियों के शेयरों में तरलता कम हो सकती है, जिससे निवेशकों को अपने शेयर बेचने में कठिनाई हो सकती है।

बढ़ रहा रिटर्न

मार्च तिमाही के नतीजों के बाद एक अहम ट्रेंड सामने आया- टॉप 250 स्मॉलकैप कंपनियों में से 74% का रिटर्न ऑन कैपिटल एम्प्लॉइड दो अंकों में रहा। इसका मतलब यह है कि ये कंपनियां न केवल मुनाफा कमा रही हैं, बल्कि इनकी ऑपरेशनल एफिशिएंसी भी बेहतर हो रही है। इससे निवेशकों में स्मॉलकैप के प्रति भरोसा पैदा होगा और एक बार फिर निवेशक इन फंडों में निवेश कर अपने भविष्य को सुरक्षित कर सकेंगे।

स्मॉलकैप में निवेश का बढ़ता मौका

फिलहाल देखा जाए तो वैल्यूएशन की दृष्टि से बाजार में अभी एक अच्छा मौका है। बहुत सारे छोटे कंपनियों के शेयर अपने असली दाम से काफी सस्ते मिल रहे हैं। इसका मतलब है कि आप अच्छे बिजनेस वाले शेयर कम कीमत में खरीद सकते हैं। स्मॉलकैप शेयरों को ज्यादा जोखिम और ज्यादा मुनाफा वाली प्रोफाइल के लिए जाना जाता है, इसलिए इन्हें अक्सर कम रिस्क लेने वाले निवेशकों की पोर्टफोलियो में नजरअंदाज किया जाता रहा है, लेकिन अब इस सोच में बदलाव आ रहा है। जब बाजार में उतार-चढ़ाव कम हो रहा है, तो निवेशकों का रुख भी पॉजिटिव हो रहा है और वे ज्यादा जोखिम उठाने को तैयार हैं। यह बदलाव व्यापक सूचकांकों में भी दिखा है। जहां पिछले महीने निफ्टी 50 ने केवल 2.6% की मामूली बढ़त दर्ज की, वहीं निफ्टी स्मॉलकैप 100 ने प्रभावशाली 14.7% की तेजी दिखाई है।

लंबी अवधि में जबरदस्त मुनाफे के मौका

स्मॉलकैप यानी छोटी कंपनियों के शेयर, लंबे समय में बहुत अच्छा रिटर्न दे सकते हैं। पिछले 7 सालों में इन कंपनियों ने औसतन हर साल करीब 27.6% का मुनाफा दिया है, जो बड़ी कंपनियों के मुकाबले कहीं ज्यादा है। इन कंपनियों का दायरा भी काफी बड़ा होता है। ये बैंकिंग, हेल्थकेयर, एफएमसीजी और पावर जैसे कई सेक्टरों में ये फैली होती हैं। इसका मतलब है, आपको निवेश के लिए अलग-अलग इंडस्ट्री में मौके मिलते हैं।

'चाइना प्लस वन' स्ट्रेटजी से स्मॉलकैप कंपनियों को नई उड़ान

ग्लोबल स्तर पर देखें तो भारत को 'चाइना प्लस वन' स्ट्रेटजी का बड़ा फायदा मिल रहा है। इस स्ट्रेटजी के तहत कई मल्टीनेशनल कंपनियां अपनी मैन्युफैक्चरिंग भारत की तरफ शिफ्ट कर रही हैं। इससे देश में इंडस्ट्रियल ग्रोथ तेज होगी और खासतौर पर स्मॉलकैप मैन्युफैक्चरिंग कंपनियों को स्केलेबिलिटी और विस्तार का बड़ा मौका मिलेगा। आज के बदलते बाजार में स्मॉलकैप शेयर निवेशकों को एक अलग तरह का एक्सपोजर देते हैं। जहां कम कीमत पर निवेश के साथ कमाई की बड़ी संभावना होती है जो लोग लंबी अवधि के लिए निवेश सोच रहे हैं और थोड़ा रिस्क लेने को तैयार हैं, उनके लिए यह वक्त स्मॉलकैप में निवेश बढ़ाने और पोर्टफोलियो को मजबूत करने का सही मौका है।

ज्यादा रिटर्न के लिए लोग रिस्क लेने को तैयार, एमएफ में बढ़ रहा निवेश का क्रेज

- अब कम हो रहा बैंक एफडी का क्रेज, निवेश के नए ऑप्शन ढूंढ़ रहे लोग
- अब लोग बैंक में पैसे जमा करने के बजाय म्यूचुअल फंड और शेयर बाजार में निवेश कर रहे
- यहां उन्हें ज्यादा फायदा लाभ मिल रहा, एसआईपी के जरिये निवेश ज्यादा पॉपुलर

ऑप्शन
बिजनेस डेस्क

बढ़ती महंगाई के इस जमाने में लोग निवेश के नए-नए विकल्प खोज रहे हैं। निवेशकों में बैंक एफडी का क्रेज घटता जा रहा है। यही कारण है कि बैंक एफडी की लोकप्रियता काफी कम हो रही है। भारतीय लोग अब बैंक में पैसे जमा करने के बजाय दूसरी जगहों पर निवेश कर रहे हैं। आजकल लोगों के बीच में म्यूचुअल फंड और शेयर बाजार जैसी जगह निवेश के लिए ज्यादा पॉपुलर हो रही हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि इन जगहों पर बैंक से ज्यादा फायदा मिल रहा है। यह जानकारी रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) के आंकड़ों से पता चली है। रिजर्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार, लोगों की बैंक टर्म डिपॉजिट्स (एफडी, आरडी) में हिस्सेदारी वित्त वर्ष 2020 के अंत में 50.54% थी। वित्त वर्ष 2025 के अंत में यह घटकर 45.77% हो गई। इसका मतलब है कि लोग अब बैंकों में पहले जितना पैसा जमा नहीं कर रहे हैं। वे निवेश के दूसरे विकल्पों पर ज्यादा भरोसा जता रहे हैं। चूंकि इन विकल्पों में उन्हें एफडी से ज्यादा लाभ मिल रहा है जो महंगाई को मात देने में सक्षम है। अब लोग लंबी अवधी के लिए एसआईपी के जरीये और शेयर बाजार में निवेश को ज्यादा महत्व दे रहे है। महंगाई के दौर को देखते हुए लोग अब ज्यादा रिस्क लेने को भी तैयार हैं, ताकि भविष्य के लिए कम समय में अच्छा पैसा एकत्र कर सकें। इसलिए भी निवेशकों में फिक्स डिपोजिट यानी बैंक एफडी का क्रेज घटता जा रहा है।

ब्याज दरों में हुआ बदलाव

जानकारों का कहना है कि इस दौरान ब्याज दरों में बदलाव हुआ है। रिजर्व बैंक ने कोविड महामारी के दौरान मार्च 2020 से मई 2022 के बीच प्रमुख रेपो दर को 115 बेसिस पॉइंट्स (1.15 प्रतिशत अंक) तक कम कर दिया था। फिर बाद में इसे 225 बेसिस पॉइंट्स तक बढ़ा दिया। हाल ही में, रिजर्व बैंक ने ब्याज दरों को कम करना शुरू कर दिया है। उसने फरवरी में 25 बेसिस पॉइंट्स, अप्रैल में 25 बेसिस पॉइंट्स और इस महीने की शुरुआत में 50 बेसिस पॉइंट्स की कटौती की है। कुल मिलाकर, ब्याज दरें 1 प्रतिशत कम हो गई हैं। इससे भी लोगों में एफडी के प्रति रुझान कम हुआ है और लोगों ने एफडी की बजाय एसआईपी में ज्यादा दिलचस्पी दिखाई है।

म्यूचुअल फंड में बढ़ी हिस्सेदारी

रिजर्व बैंक के आंकड़ों से पता चलता है कि बचत जमा में व्यक्तियों की हिस्सेदारी पिछले पांच सालों में लगभग 77% पर स्थिर रही है। इसका मतलब है कि लोग अभी भी बचत खाते में पैसा रख रहे हैं। वे म्यूचुअल फंड में भी खूब निवेश कर रहे हैं। अप्रैल तक 23 करोड़ म्यूचुअल फंड अकाउंट्स में से 91% खाते व्यक्तियों के हैं। मई 2021 में यह आंकड़ा 10 करोड़ से थोड़ा ही ज्यादा था। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया के आंकड़ों से यह जानकारी मिली है।

अलग-अलग कर रहे बचत

रिजर्व बैंक के अर्थशास्त्रियों के एक रिसर्च पेपर के अनुसार, भारतीय परिवारों की वित्तीय बचत के पोर्टफोलियो में बदलाव देखा गया है। इसका मतलब है कि लोग अब अपनी बचत को अलग-अलग जगहों पर लगा रहे हैं। बैंकों में जमा की हिस्सेदारी समय के साथ कम हुई है, जबकि इंश्योरेंस और म्यूचुअल फंड में निवेश बढ़ा है। वही लोग शेयर बाजार, गोल्ड और सिल्वर में भी निवेश को बढ़ावा देने लगे हैं।

गिरावट का कारण यह भी

एक बड़े बैंक के मुख्य अर्थशास्त्री ने कहा कि जमा में गिरावट का कारण यह है कि लोगों की बचत कम हो रही है और वे शेयर बाजार जैसे अन्य निवेश विकल्पों में ज्यादा पैसा लगा रहे हैं। म्यूचुअल फंड के प्रबंधन के तहत संपत्ति 30 अप्रैल को बढ़कर 69.50 लाख करोड़ रुपये हो गई। वित्त वर्ष 2020 के अंत में यह 22.26 लाख करोड़ रुपये थी। इसका मतलब है कि म्यूचुअल फंड में लोगों का निवेश बहुत तेजी से बढ़ा है। एक अन्य बैंक के अर्थशास्त्री ने कहा कि यह बाजार की वजह से है, लेकिन जरूरी नहीं कि जनसांख्यिकी के कारण हो।

रिस्क ले रहे लोग

दिसंबर 2024 में रिजर्व बैंक के एक पेपर में कहा गया था कि बचत करने वालों का तरीका बदल रहा है। साल 2022 में 17.8% भारतीय परिवारों ने जोखिम वाली संपत्तियों में निवेश किया था। वहीं साल 2019 में यह आंकड़ा 15.7% था। जोखिम वाली संपत्तियां मतलब ऐसी जगहें जहां पैसा डूबने का खतरा होता है, जैसे कि शेयर बाजार।

क्या है एफडी में निवेश

एफडी (फिक्स्ड डिपॉजिट) में निवेश एक प्रकार का निवेश है जिसमें आप एक निश्चित अवधि के लिए अपने पैसे को बैंक या अन्य वित्तीय संस्थान में जमा करते हैं और बदले में एक निश्चित ब्याज दर प्राप्त करते हैं।

- निश्चित आय: एफडी में निवेश करने से आपको एक निश्चित आय प्राप्त होती है जो आपके पैसे को बढ़ाने में मदद करती है।
- जोखिम मुक्त: एफडी में निवेश जोखिम मुक्त होता है क्योंकि आपका पैसा बैंक या अन्य वित्तीय संस्थान के पास जमा होता है।
- लिक्विडिटी: एफडी में निवेश करने से आपको अपने पैसे को आवश्यकता पड़ने पर निकालने की सुविधा होती है, हालांकि इसमें कुछ शर्तें और जुर्माना हो सकता है।
- कर लाभ: एफडी पर ब्याज आय पर कर लगता है, लेकिन कुछ प्रकार के एफडी जैसे कि टैक्स सेवर एफडी पर कर लाभ मिलता है।

एसआईपी में निवेश के लाभ

- एसआईपी में निवेश एक प्रकार का निवेश है जिसमें आप नियमित अंतराल पर एक निश्चित राशि का निवेश म्यूचुअल फंड में करते हैं।
- नियमित निवेश: एसआईपी में निवेश करने से आपको नियमित अंतराल पर निवेश करने की आदत पड़ती है।
- रुपये कॉस्ट एवरेजिंग: एसआईपी में निवेश करने से आपको रुपये कॉस्ट एवरेजिंग का लाभ मिलता है, जिससे आपको बाजार की उतार-चढ़ाव से बचने में मदद मिलती है।
- लंबी अवधि का निवेश: एसआईपी में निवेश करने से आपको लंबी अवधि के लिए निवेश करने का अवसर मिलता है, जिससे आपको अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलती है।
- विविधीकरण: एसआईपी में निवेश करने से आपको विभिन्न प्रकार के म्यूचुअल फंड में निवेश करने का अवसर मिलता है, जिससे आपको अपने पोर्टफोलियो को विविध बनाने में मदद मिलती है।

पांच साल के रिटर्न चार्ट पर स्मॉलकैप फंड सबसे आगे

टॉप 25 में 13 स्कीम ने 33 से 38% सालाना मिला रिटर्न दिया, म्यूचुअल फंड में स्मॉलकैप कैटेगरी हाई रिटर्न का बेहतर विकल्प है, निवेश के लिए लक्ष्य कम से कम 5 से 7 साल का रखना होना जरूरी

रिटर्न
बिजनेस डेस्क

यदि आप भी निवेश कर रहे हैं या करने जा रहे हैं तो म्यूचुअल फंड की स्मॉलकैप कअेगरी आपके लिए निवेश का बढ़िया विकल्प साबित हो सकती है। इसके लिए आपको थोड़ा सयंम के साथ निवेश का लक्ष्य तय करना होगा। इस श्रेणी में अच्छा रिटर्न लेने के लिए आपको निवेश का लक्ष्य कम से कम 5 से 7 साल को लेकर चलना होगा। फाइनेंशियल एडवाइजर्स की यह सलाह रिटर्न चार्ट देखकर बिल्कुल सही साबित होती है। बीते 5 साल या 60 महीनों के दौरान रिटर्न के मामले में सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले म्यूचुअल फंड स्कीम पर नजर डालें तो स्मॉलकैप फंड्स ने बाजी मार ली है। 5 साल के टॉप 25 स्कीम में 13 स्कीम स्मॉलकैप फंड कैटेगरी की हैं, जिनमें 33 से 38 फीसदी एनुअलाइज्ड रिटर्न मिल रहा है। 5 साल में 38 फीसदी एनुअलाइज्ड रिटर्न से कैलकुलेशन करें तो यह रिटर्न करीब 5 गुना होता है। यानी 38 फीसदी सीएजीआर रिटर्न वाली स्कीम ने 5 साल में निवेशकों का पैसा 5 गुना बढ़ा दिया। वहीं, 33 फीसदी एनुअलाइज्ड रिटर्न से कैलकुलेशन करें तो यह करीब 4 गुना रिटर्न होगा। इसका मतलब है कि 33 फीसदी सीएजीआर रिटर्न वाली स्कीम ने 5 साल में निवेशकों का पैसा 4 गुना बढ़ा दिया।

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड टॉपर

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड 5 साल में 38 फीसदी सीएजीआर रिटर्न के साथ न सिर्फ स्मॉलकैप कैटेगरी का बल्कि ओवरआल भी टॉपर रहा है। इस फंड ने 5 साल में 1 लाख का निवेश 5 लाख रुपये बना दिया। इसके बाद बेहतर प्रदर्शन करने वाली टॉप 5 में शामिल अन्य स्कीम बंधन स्मॉलकैप फंड ने 37.32% एनुअलाइज्ड रिटर्न, बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड ने 36% एनुअलाइज्ड रिटर्न, इडेलवाइस स्मॉलकैप फंड ने 35.50% एनुअलाइज्ड रिटर्न और एचएसबीसी स्मॉलकैप फंड ने 35.35% रिटर्न दिया है।

फाइनेंशियल एडवाइजर्स भी बोले, लक्ष्य तय कर लंबी अवधि के लिए निवेश करें, निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड 5 साल में 38 फीसदी सीएजीआर रिटर्न के साथ टॉपर

ये हैं 5 साल के टॉप 13 फंड

1. **निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड : 38%**
   ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.50% सालाना रहा है. फंड का लेटेस्ट एयूएम 63,007 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.65% है।
2. **बंधन स्मॉलकैप फंड : 37.32%**
   ये स्कीम 25 फरवरी 2020 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 35.23% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 11,744 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.39% है।
3. **बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड : 36%**
   ये स्कीम 19 दिसंबर 2018 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 28.40% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 1,819 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.53% है।
4. **इडेलवाइस स्मॉलकैप फंड : 35.50%**
   ये स्कीम 7 फरवरी 2019 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 27.84% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 4,580 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.43% है।
5. **एचएसबीसी स्मॉलकैप फंड : 35.35%**
   ये स्कीम 12 मई 2014 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 21.12% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 16,061 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.63% है।
6. **टाटा स्मॉलकैप फंड : 35%**
   ये स्कीम 12 नवंबर 2018 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.31% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 10,529 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.34% है।
7. **इन्वेस्को इंडिया स्मॉलकैप फंड : 35%**
   ये स्कीम 30 अक्टूबर 2018 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.74% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 6,823 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.44% है।
8. **केनरा रोबोको स्मॉलकैप फंड : 34.80%**
   ये स्कीम 15 फरवरी 2019 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.64% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 12,368 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.47% है।
9. **एचडीएफसी स्मॉलकैप फंड : 34.33%**
   ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 20% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 34,032 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.73% है।
10. **कोटक स्मॉलकैप फंड : 33.55%**
   ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 20.26% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 17,329 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.55% है।
11. **आईसीआईसीआई प्रू स्मॉलकैप फंड : 33.17%**
   ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 17.84% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 8,254 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.73% है।
12. **सुंदरम स्मॉलकैप फंड : 33%**
   ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 18.72% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 3,311 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.86% है।
13. **एलआईसी एमएफ स्मॉलकैप फंड : 32.65%**
   ये स्कीम 21 जून 2017 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 16.13% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 576 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.92% है।

कम जोखिम में ज्यादा रिटर्न चाहते हैं तो अपनाएं म्यूचुअल फंड्स ट्रेप्स का फंडा

- *ट्रेप्स के जरिये कर सकते हैं अच्छी कमाई, हर निवेशक रखे जानकारी*
- *यह टूल न तरलता को आसानी से मैनेज करने में मदद करता है*
- *यह रिटर्न भी बढ़ाता है और पोर्टफोलियो को भी मजबूत बनाता है*
- *एफएफ के लिए बेहतर रिटर्न, सुरक्षित निवेश और शानदार लिक्विडिटी*
- *ट्रेप्स में एक पार्टी ट्रेजरी बिल्स को दूसरी पार्टी को बेचती है*

जानकारी
बिजनेस डेस्क

क्या म्यूचुअल फंड्स को कम जोखिम में ज्यादा रिटर्न मिल सकता है? तो इसका जवाब है हां! ट्रेप्स (ट्रेजरी बिल्स रीपरचेज) नाम के स्मार्ट टूल से म्यूचुअल फंड्स अपनी लिक्विडिटी को मैनेज करते हुए रिटर्न बढ़ाते हैं और पोर्टफोलियो को मजबूत बनाते हैं। ये टूल उन्हें न सिर्फ अपनी तरलता को आसानी से मैनेज करने में मदद करता है, बल्कि रिटर्न भी बढ़ाता है और पोर्टफोलियो को भी मजबूत बनाता है। ट्रेप्स की मदद से म्यूचुअल फंड्स सरकार की सिक्योरिटीज़ का सहारा लेते हुए शॉर्ट-टर्म में फंड्स खरीदने और बेचने का काम कर सकते हैं। तो चलिए, जानते हैं कि ट्रेप्स कैसे काम करता है और ये क्यों म्यूचुअल फंड्स के लिए एक शानदार टूल है। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि यह सरकारी सिक्योरिटीज पर बेस्ड शॉर्ट-टर्म इन्वेस्टमेंट का तरीका कैसे काम करता है और आपके निवेश को कैसे बेहतर बना सकता है।

ट्रेप्स यानी 'ट्रेजरी बिल्स रीपरचेज' एक शॉर्ट-टर्म इन्वेस्टमेंट का तरीका है, जो निवेशकों को इस्तेमाल ना होने वाले पैसों से रिटर्न कमाना में मदद करता है। इसे खासतौर पर बैंक, फाइनेंशियल इंस्टिट्यूशन और म्यूचुअल फंड्स इस्तेमाल करते हैं, ताकि वो अपनी कमाई को बढ़ा सकें। ट्रेप्स में एक पार्टी ट्रेजरी बिल्स को दूसरी पार्टी को बेचती है और फिर एक तय तारीख और कीमत पर इन्हें वापस खरीदने का समझौता करती है. ये लेन-देन सरकार की सिक्योरिटी से सुरक्षित होता है, इसलिए इसमें जोखिम कम होता है। मान लीजिए, किसी म्यूचुअल फंड के पास ज्यादा पैसा पड़ा है और वो उसे ऐसा निवेश करना चाहता है, जिसमें लिक्विडिटी बनी रहे। तब वो उस पैसे को ट्रेप्स के जरिए निवेश कर सकता है। इस तरीके से म्यूचुअल फंड को बिना पैसा जमा किए ही ब्याज मिल जाता है और उसकी लिक्विडिटी भी बनी रहती है।

म्यूचुअल फंड्स में कैसे काम करता है ट्रेप्स

मान लीजिए, किसी म्यूचुअल फंड को अचानक बड़े अमाउंट की जरूरत पड़ गई, जैसे कि कस्टमर्स के द्वारा पैसे निकालने के कारण। ऐसे में वह ट्रेप्स का इस्तेमाल कर सकता है। इससे उसे अपनी लंबी अवधि के इन्वेस्टमेंट्स को नुकसान में बेचने की जरूरत नहीं होती। ट्रेप्स सरकारी सिक्योरिटीज पर बेस्ड होते हैं, इसलिए ये काफी सुरक्षित माने जाते हैं। ट्रेप्स म्यूचुअल फंड्स के लिए एक शानदार तरीका है, जो उन्हें सेफ्टी, लिक्विडिटी और बेहतर रिटर्न्स का अच्छा संतुलन देता है।

ट्रेप्स के प्रमुख फायदे

- निवेशकों के लिए ज्यादा रिटर्न्स : जब बाजार में ब्याज दरें बढ़ी होती हैं, तो ट्रेप्स के जरिए म्यूचुअल फंड्स अपनी खाली पड़ी नकदी से अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। इसमें वह उस फंड का इस्तेमाल करते हैं, जिसे वह उस समय शेयर मार्केट में निवेश नहीं करना चाहते हैं।
- नियमों का पालन : सेबी ने यह नियम बनाया है कि म्यूचुअल फंड्स को अपनी लिक्विड एसेट का एक हिस्सा ट्रेप्स में निवेश करना होगा। इससे निवेशकों को यह भरोसा मिलता है कि उनके पैसे सुरक्षित हैं और सभी नियमों का पालन हो रहा है।
- फास्ट लिक्विडिटी : ट्रेप्स की सबसे अच्छी बात यह है कि म्यूचुअल फंड्स को जल्दी से पैसा मिल जाता है। जब किसी को पैसे की जरूरत होती है, तो ट्रेप्स से वे जल्दी नकदी ले सकते हैं।
- डायवर्सिफिकेशन : म्यूचुअल फंड्स के पोर्टफोलियो को अलग-अलग प्रकार के निवेशों में बांटना जरूरी है, ताकि जोखिम कम हो। ट्रेप्स इस डायवर्सिफिकेशन में मदद करता है और म्यूचुअल फंड्स को बाजार की उतार-चढ़ाव से बचाता है।
- ट्रेप्स म्यूचुअल फंड्स के लिए एक बेहतरीन तरीका है, जो उन्हें ज्यादा रिटर्न्स, सुरक्षित पोर्टफोलियो और पैसे की सुरक्षा देता है।

ट्रेप्स की विशेषताएं

- अल्पकालिक निवेश : ट्रेप्स अल्पकालिक निवेश विकल्प है जिसमें निवेश की अवधि आमतौर पर कुछ दिनों से लेकर कुछ महीनों तक होती है।
- सरकारी समर्थन : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको सरकारी समर्थन मिलता है, जो इसे एक सुरक्षित निवेश विकल्प बनाता है।
- लिक्विडिटी : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको उच्च लिक्विडिटी मिलती है, जिससे आप अपने पैसे को आवश्यकता पड़ने पर निकाल सकते हैं।

ट्रेप्स के लाभ

- सुरक्षित निवेश : ट्रेप्स एक सुरक्षित निवेश विकल्प है क्योंकि इसमें सरकारी समर्थन होता है।
- निश्चित आय : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको निश्चित आय प्राप्त होती है।
- लिक्विडिटी : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको उच्च लिक्विडिटी मिलती है।

खबर संक्षेप

ग्राम पंचायत ढाणा ने किया पौधरोपण

नारनौल। कनीना के गांव ढाणा में सरपंच राधेश्याम यादव के नेतृत्व में गांव के श्मशान घाट में ग्रामीणों के सहयोग से अनेक पौधे लगाए गए। सरपंच ढाणा ने बताया सरकार द्वारा चलाई जा रही एक पेड़ मां के नाम से चलाई जा रही योजना से प्रेरित होकर आज गांव के श्मशान घाट में पौधरोपण किया गया। इसके साथ ही हम सभी ने प्रण किया है। हम इन पौधों की पूरी देखभाल करेंगे और आने वाले बरसात के समय में गांव ढाणा में एक हजार पौधे लगाने और उनको पालने का प्रण किया है। इस मौके पर राजसिंह ठेकेदार, ग्राम सचिव विकास, हवलदार आकाश यादव, अनुज ढाणा, महेश, अंकुर व सुनील सेठी आदि ग्रामीण हाजिर रहे और पौधेरोपण में सहयोग किया।

कॉलेजियम मेंबर के लिए हेमंत ने किया नामांकन

नारनौल। जिला गौड़ ब्राह्मण सभा में त्रिवार्षिक कॉलेजियम मेंबर चुनाव के लिए शनिवार को नामांकन शुरू हो गया। जिला के वार्ड नंबर 54 से समाजसेवी हेमंत कृष्ण भारद्वाज एडवोकेट सिहमा ने अपना चुनाव नामांकन पत्र मुख्य चुनाव अधिकारी गौड़ ब्राह्मण सभा मनीष वशिष्ठ एडवोकेट, सहायक चुनाव अधिकारी नरेश जोशी को उपस्थिति में सौंपा। हेमंत भारद्वाज एडवोकेट के चुनाव प्रस्तावक के रूप में उनके साथ उनके वार्ड के लक्ष्मीनारायण जोशी ने उनके चुनाव फार्म पर हस्ताक्षर करके अपनी सहमति दी है। गौरतलब है कि वार्ड 54 में एक दर्जन गांव व इनमें 43 वोट समाज के लोगों के है, जिसमें सबसे अधिक वोट सिहमा गांव में है। जिला गौड़ ब्राह्मण सभा के जिलेभर से इस बार 87 सदस्य निर्वाचित होने है।

मोबाइल वैन चिकित्सा दल ने लोगों की स्वास्थ्य जांच की

कनीना। गांव उन्हानी में ग्रामीणों के स्वास्थ्य की जांच करने के लिए स्वास्थ्य विभाग नारनौल से मोबाइल वैन टीम पहुंची। उप नागरिक अस्पताल के चिकित्सा अधिकारी डॉ. रेणु वर्मा एवं टीबी यूनिट इंचार्ज डॉ. हनुमान के दिशा-निर्देश में यह स्वास्थ्य जांच कैंप लगाया गया। स्वास्थ्यकर्मी राजबीर सोनी ने बताया कि स्वास्थ्य जांच टीम में रमन नर्सिंग ऑफिसर, सुदेश एलटी, लक्ष्मी फार्मेसी आफिसर, कृष्ण कुमार ने स्वास्थ्य कैंप में आए 238 ग्रामीणों के स्वास्थ्य की जांच की। टीबी यूनिट कनीना के एसटीएस पवन कुमार, टीबी एचवी युद्धवीर, हूमन कोरियर देवेंद्र कुमार ने टीबी की जांच के लिए 10 मरीजों के बलगम के सैंपल लिए एवं उनकी एचआईवी जांच की गईं। मौके पर सीएचओ डॉ. हिमानी, स्वास्थ्यकर्मी राजबीर सोनी, एएनएम नवीन, नीलम, आशा वर्कर मुनेश उपस्थित रहीं।

सिहमा के शहीद जसवंत की 30वीं पुण्यतिथि पर दी श्रद्धांजलि

सीमाओं की सुरक्षा की जिम्मेदारियां निभाने में वीर सैनिकों का अहम योगदानः अमीलाल

श्रद्धांजलि सभा में समूह केंद्र गुरुग्राम से आए सीआरपीएफ के सहायक कमांडेंट सुहेल लियाकत व उनकी टीम ने शहीद के चित्र के सामने पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि देकर शहीद के परिवार को सम्मानित किया।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| मंडी अटेली

मंडी अटेली। शहीद सब इंस्पेक्टर जसवंत सिंह व शहीद की पत्नी को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

सिहमा के शहीद सीआरपीएफ के जवान सब इंस्पेक्टर जसवंत सिंह की 30वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस श्रद्धांजलि सभा में समूह केंद्र गुरुग्राम से आए सीआरपीएफ के सहायक कमांडेंट सुहेल लियाकत व उनकी टीम ने शहीद के चित्र के सामने पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि देकर शहीद के परिवार को सम्मानित किया।

सब इंस्पेक्टर जसवंत सिंह सन 1963 में सिपाही के पद पर मध्य प्रदेश के नीमच में भर्ती हुए थे। वह 83 बटालियन सीआरपीएफ मणिपुर में तैनात थे। बचपन से ही उनका सेवा में जाने की रुचि थी। 28 जून सन 1995 में मणिपुर में पेट्रोलिंग करते समय आतंकवादियों से उनकी मुठभेड़ हो गई। इस मुठभेड़ में वह देश के लिए शहीद हो गए। शहीद जसवंत सिंह के दो बेटे एवं एक बेटी है। उनका बड़ा बेटा वेदपाल सीआरपीएफ में डीएसपी के पद पर गुरुग्राम में तैनात है। उनका छोटा बेटा राकेश कुमार जिला उपायुक्त कार्यालय नारनौल में कार्यरत है। उनकी बेटी की शादी हो चुकी है।

शहीद के बड़े बेटे डीएसपी वेदपाल ने बताया कि जब वह ड्यूटी करता है तो उसे गर्व होता है कि उसके पिता ने देश के लिए अपने प्राणों की आहुति देकर भारत माता की रक्षा की है। वह खुद भी अपने पिता की तरह ही देश की सेवा कर रहा है। शहीद के छोटे भाई अमीलाल ठेकेदार ने बताया कि आजादी से लेकर वर्तमान में सीमाओं की सुरक्षा की जिम्मेदारियां निभाने में वीर सैनिकों का अहम योगदान रहा है। हम सबको इस बात का अहसास होना चाहिए कि हमारे सैनिक किस प्रकार अपने घरों से दूर रहकर और विपरीत परिस्थितियों में देश की सुरक्षा में लगे हैं। शहीदों के त्याग की भांति हमें भी देश को आगे बढ़ाने में अपनी भूमिका निभानी चाहिए। देश के वीर-शहीद हम सबकी प्रेरणा के स्त्रोत हैं। उन्होंने देश की रक्षा के लिए जो बलिदान और त्याग किए, हमें उनका अनुकरण करना चाहिए। सिहमा गांव के ग्रामीणों ने गुरुग्राम से आए सीआरपीएफ के सहायक कमांडेंट सुहेल लियाकत से गांव के राजकीय मॉडल संस्कृति स्कूल का नाम शहीद सब इंस्पेक्टर जसवंत सिंह के नाम पर रखने की मांग की। सहायक कमांडेंट ने आश्वासन दिया है कि प्रदेश सरकार को जल्द एक पत्र भेज दिया जाएगा। इस मौके पर शहीद जसवंत सिंह की पत्नी नारायणी देवी, सरपंच प्रतिनिधि प्रमोद यादव, राजेंद्र, फूल सिंह, अमीलाल, पूर्व सरपंच नरेश यादव, सुखबीर, जगदीश, बिरेंद्र, रामौतार, हवलदार हीरालाल प्रजापत, हवलदार विद्यानंद, जयपाल सिंह शेखावत, नरेंद्र सिंह व नरेश कुमार के ग्रामीणों ने उनको श्रद्धांजलि दी।

सूरज डिग्री कॉलेज का बीबीए व बीएससी में शानदार प्रदर्शन

पूजा

शिवानी

नेहा

- बीबीए की छात्रा पूजा ने पूरे विश्वविद्यालय में पाया दूसरा स्थान

महेंद्रगढ़। इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर द्वारा बीबीए और बीएससी आनर्स फिजिक्स चतुर्थ सेमेस्टर का परिणाम घोषित किया गया, जिसमें सूरज कॉलेज के विद्यार्थियों का प्रदर्शन उत्कृष्ट रहा। कॉलेज निदेशक संदीप प्रसाद ने बताया कि बीएससी आनर्स फिजिक्स की छात्रा नेहा पुत्री चेतन प्रकाश निवासी महेंद्रगढ़ ने 79.11 प्रतिशत अंक के साथ विश्वविद्यालय में आठवां एवं कॉलेज में प्रथम स्थान पर रही, इसी संकाय की छात्रा मनीषा पुत्री कृष्ण कुमार निवासी बिहाली ने 74.89 प्रतिशत अंक हासिल कर कॉलेज में द्वितीय स्थान पर रही। इसी कड़ी में बीबीए चतुर्थ सेमेस्टर की छात्रा पूजा पुत्री विक्रम कुमार निवासी रामलवास ने 81.17 प्रतिशत अंक हासिल कर पूरे विश्वविद्यालय में दूसरे व कॉलेज में प्रथम स्थान पर रही। जबकि छात्रा शिवानी पुत्री कुलदीप सोनी निवासी महेन्द्रगढ़ ने 76.33 प्रतिशत अंक के साथ पूरे विश्वविद्यालय में दसवां एवं कॉलेज में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इसी संकाय की छात्रा भावना पुत्री छवि प्रकाश निवासी निम्बी ने 75.33, अरविंद पुत्र बीरसिंह निवासी झगड़ोली ने 63.33, हिना पुत्री छविप्रकाश ने 62.0 प्रतिशत अंक के साथ परीक्षा को उत्तीर्ण किया। कॉलेज प्राचार्य डॉ. सुधाकर गुप्ता ने बताया कि कॉलेज का श्रेष्ठ परिणाम विद्यार्थियों के कठोर परिश्रम व शिक्षकों के मार्गदर्शन का परिणाम है। उन्होंने बताया कि कॉलेज के विद्यार्थी किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। निदेशक संदीप प्रसाद ने भी परिणाम पर खुशी जाहिर करते हुए विद्यार्थियों, अभिभावकों व शिक्षकों को बधाई दी।

सर्व अजा संघर्ष समिति खण्ड नांगल चौधरी के पुनः प्रधान बने रोहतास बबेरवाल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

नारनौल। नवनियुक्त पदाधिकारी व संस्था के सदस्य। फोटो : हरिभूमि

सर्व अनुसूचित जाति संघर्ष समिति के तत्वावधान में डॉ. अंबेडकर भवन में नांगल चौधरी के त्रिवार्षिक खंड स्तरीय चुनाव करवाने के संबंध में समिति के प्रधान चन्दन सिंह जालवान की अध्यक्षता में बैठक का आयोजन किया गया। जिसका संचालन करते हुए समिति के महासचिव एवं कबीर सामाजिक उत्थान संस्था दिल्ली के वाइस चेयरमैन बिरदी चंद गोठवाल ने सभा में गत बैठक के कार्रवाई पढ़कर सुनाई। जिसका सर्व सहमति से अनुमोदन कर दिया गया। इसके बाद गोठवाल ने सभा को सर्व अनुसूचित जाति संघर्ष समिति की ओर से अब तक किए गए कार्यों की विस्तृत जानकारी दी। तत्पश्चात चुनाव अधिकारी अंबेडकर सभा के प्रदेश लेखा सचिव रामकुमार ढैणवाल व सहायक चुनाव अधिकारी पूर्व वरिष्ठ प्रबंधक जयपाल सिंह व नारनौल खण्ड के प्रधान सुरेश नारनौलिया की अगुवाई में खण्ड नांगल चौधरी के विभिन्न पदों का आम सहमति से निर्विरोध चयन कर दिया गया।

जिसमें प्रमुख सलाहकार राजेंद्र कुमार दोखेरा व शेरसिंह इकबालपुर नंगली, प्रधान रोहतास बबेरवाल, उपप्रधान विक्रम चौधरी, सचिव एडवोकेट राहुल चौधरी, कोषाध्यक्ष मुकेश कुमार को आम सहमति से निर्विरोध निर्वाचित किया गया है। समिति की ओर से सभी नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को फूलमालाएं पहनाकर सम्मानित किया गया और समिति के प्रधान चन्दन सिंह जालवान ने सभी पदाधिकारियों को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। खण्ड नांगल चौधरी के प्रधान रोहतास बबेरवाल ने आश्वासन दिया कि दलितों के हक, अधिकार और सामाजिक न्याय की लड़ाई में नांगल चौधरी की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी हमेशा अहम भूमिका निभाएगी। समिति प्रधान चन्दन सिंह जालवान ने सफल व शांतिपूर्ण चुनाव सम्पन्न होने पर सभी का आभार व्यक्त किया। खण्ड कनीना के आगामी चुनाव भोजावास के अंबेडकर भवन में छह जुलाई को करवाने की पुष्टि की। इस मौके पर समिति के कानूनी सलाहकार एडवोकेट भीमसिंह दहिया, बंशीधर बायला, गुरु रविदास महासभा के प्रधान बलबीर सिंह बबेरवाल, नांगल दर्गू के सरपंच पूर्णमल, बनवारी लाल आर्य, सुल्तान सिंह जाटीवाल, लखीराम बबेरवाल, नीरसिंह दताल, मनोज कुमार गोलवा, शीशराम, बिट्टू, गजानंद, किशनलाल आदि उपस्थित रहे।

जजपा के सदस्यता अभियान में लोगों का मिल रहा है भरपूर जनसमर्थनः सुरेंद्र पटीकरा

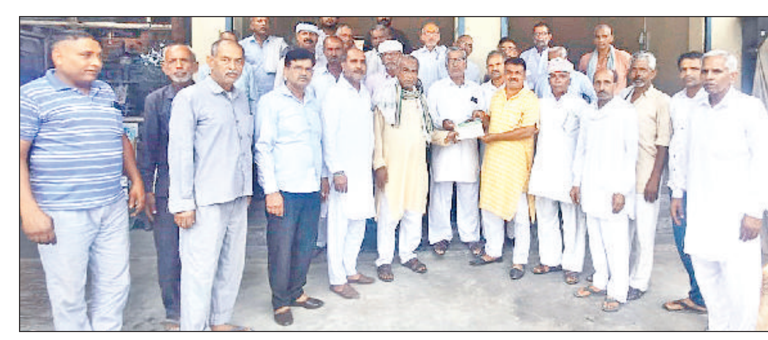

नारनौल। जनसम्पर्क अभियान के दौरान सुरेंद्र पटीकरा व अन्य। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

जननायक जनता पार्टी के हलका प्रधान सुरेंद्र यादव की अगुवाई में सदस्यता अभियान के अंतर्गत शनिवार को नसीबपुर गांव में लोगों ने पार्टी की सदस्यता अभियान में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इस अवसर पर सुरेंद्र प्रधान ने बताया कि पार्टी राष्ट्रीय अध्यक्ष अजय सिंह चौटाला के आदेशानुसार प्रदेश स्तर पर 15 जून से 31 जुलाई तक सदस्यता अभियान चलाया जा रहा है। जिसके अंतर्गत सभी हलके से पांच हजार सदस्य बनाए जाएंगे। उन्होंने कहा कि पार्टी के इस सदस्यता अभियान में लोग बहुत खुशी से पार्टी की नीतियों से प्रभावित होकर सदस्यता ग्रहण कर रहे हैं। सदस्यता अभियान में लोगों का जनसमर्थन भरपूर मिल रहा है। उन्होंने कहा कि पार्टी आगे बूथ स्तर पर व वार्ड स्तर पर भी अभियान को आगे बढ़ाया जाएगा। जिसमें लोगों को पार्टी की नीतियों से अवगत कराया जाएगा तथा ज्यादा से ज्यादा लोगों को जोड़ा जाएगा। इस मौके पर अशोक सैनी, संदीप भांखर पार्षद, कार्यालय सचिव वीरेन्द्र घाटाशेर, कुनाल शुक्ला, ईश कुमार, ओमप्रकाश प्रजापत, महेंद्र सिंह, रामसिंह, तनसुख, रामनिवास, गौरीशंकर शर्मा अधिक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

नारनौल। कार्यक्रम में भाग लेते शिक्षक। फोटो : हरिभूमि

राव नेतराम स्कूल में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

नारनौल। सीबीएसई की निर्देशानुसार राव नेतराम पब्लिक स्कूल सलीमपुर में अध्यापक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस विषय जानकारी देते हुए विद्यालय प्राचार्या अनिता देवी ने बताया कि विद्यालय परिसर में आयोजित कार्यशाला में 60 शिक्षकों भाग लिया। जिसका विषय लाइफ स्कील था। प्रशिक्षण कार्यशाला में सीबीएसई की ओर से निर्धारित रिसोर्स पर्सन डॉ. राममोहन वशष्ठि व नरोतमा शर्मा ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। उन्होंने बताया कि सीबीएसई की ओर से सभी अध्यापकों को 25 घंटे का प्रशिक्षण अनिवार्य है। कार्यशाला में शिक्षकों के साथ विभीन्न विषयों पर चर्चा हुई कि किस प्रकार बच्चों को औश्र अच्छी शिक्षा व बेहतर वातावरण के साथ अच्छे परिणाम दिए जा सके। जिसके लिए बच्चों के साथ कक्षा में चर्चा, डिबेट, कहानी, गीत, ड्रामा व खेल-खेल में सिखाने का प्रयास करना चाहिए।

प्रधानमंत्री के मन की बात कार्यक्रम को बूथ स्तर तक सफल बनाएः यतेंद्र राव

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

नारनौल। बैठक को संबोधित करते भाजपा जिलाध्यक्ष यतेंद्र राव। फोटो : हरिभूमि

भाजपा जिला कार्यालय में मन की बात कार्यक्रम को लेकर एक बैठक रखी गई। जिसकी अध्यक्षता करते हुए भाजपा जिला अध्यक्ष यतेंद्र राव ने की। बैठक में इस बार पीएम के लोकप्रिय कार्यक्रम को बूथ स्तर तक सफल बनाने व हर बूथ पर सक्रियता बढ़ाने इस विषय पर विस्तृत चर्चा की गई। पिछले महीने भी जिला टीम ने सभी 772 बूथों पर शत प्रतिशत रिपोर्टिंग संगठन की सरल ऐप पर की थी। जिसके लिए टीम को मुख्यमंत्री, प्रदेश अध्यक्ष व संगठन मंत्री ने पंचकूला में सराहा था। इस बार भी शत प्रतिशत का लक्ष्य है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 29 जून सुबह 11 बजे अपने मन की बात के माध्यम से देश को संबोधित करेगें। हर महीने प्रसारित होने वाले मन की बात कार्यक्रम की यह 123वीं कड़ी होगी। प्रधानमंत्री मोदी आमतौर पर हर माह आखिरी रविवार को सुबह 11 बजे रेडियो के माध्यम से देशवासियों से मन की बात करते हैं। प्रधानमंत्री का लोगों के साथ यह संवाद काफी लोकप्रिय है। इस रेडियो कार्यक्रम को तमाम न्यूज चैनल भी प्रसारित करते हैं। इस कार्यक्रम के लिए आप भी अपने विचार व सुझाव साझा कर सकते है। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी उनमें से कुछ चयनित विचारों व सुझावों को अपने कार्यक्रम में शामिल करते हैं। यतेंद्र राव ने कि आप टोल फ्री नंबर 1800117800 पर फोन कर संदेश रिकॉर्ड करा सकते हैं। इस मौके पर मुकेश, मंजीत, हरपाल, वीरेंद्र, प्रवीण, मनोज कुमार, मनोज यादव, कर्मवीर, प्रमोद, सुभाष, अशोक, संदीप, दीपिका, बेबी देवी, किशनलाल, संजय अमन, आनंद मेहता, विकास अग्रवाल आदि मौजूद थे।

नारनौल। मीटिंग करते गुर्जर कल्याण परिषद के पदाधिकारी। फोटो : हरिभूमि

गुर्जर कल्याण परिषद की निर्विरोध चुनी गई नई कार्यकारणी सत्यापित

नारनौल। गुर्जर कल्याण परिषद की गत दिनों चुनी गई कार्यकारिणी को फर्म एंड सोसायटी ने सत्यापित कर दिया है। बता दें कि गुर्जर कल्याण परिषद की गत 14 जून को हुई अहम बैठक में कार्यकारणी एवं सदस्यों का निर्विरोध रूप से गठन करने का निर्णय लिया गया था, जिसमें अध्यक्ष पद पर कुलदीप सिंह भरगड़ एडवोकेट को तीसरी बार चुना गया। कुलदीप भरगड़ को प्रथम बार 2019 में संस्था के अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी मिली थी, जिसके बाद उन्होंने सार्वजनिक रूप से संस्था की बैठक कर मृत्यु–भोज, बाल विवाह जैसी समाज में फैली कुरीतियों के खिलाफ प्रस्ताव पास करवा कर पाबंदी लगाने का प्रयास किया और समाज के मेधावी छात्रों हेतु प्रति वर्ष प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित करने की पहल की। होली मिलन समारोह जैसे कार्यक्रमों की शुरुवात करवा की और सालों से गुर्जर समाज के लिए जिला हेडक्वार्टर पर सामुद्घायिक भवन के लिए भूमि की सरकार से मांग उठाई तथा भू खंड खरीद कर गुर्जर छात्रावास/लाइब्रेरी बनाने की तैयारी की हुई है, जैसे महत्वपूर्ण कार्य करवाए। इस बैठक में निर्विरोध ही उपाध्यक्ष के रूप में रामशरण चंदेला को चुना गया। वह पूर्व बैंक मैनेजर एवं संतराम सिराधना पूर्व डीएम हैफेड रह चुके हैं। सचिव पद हेतु निर्विरोध सेवानिवृत एयरफोर्स उमराव सिंह चंदेला को पुनः उनके द्वारा लिए गए कार्यों को देखते हुए दोबारा चुना गया है। सह–सचिव के रूप में डॉ. रामपाल गुर्जर जैलाफ को चुना गया।

नेकी की दीवार नीडी हेल्प ग्रुप ने बिटिया का किया कन्यादान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

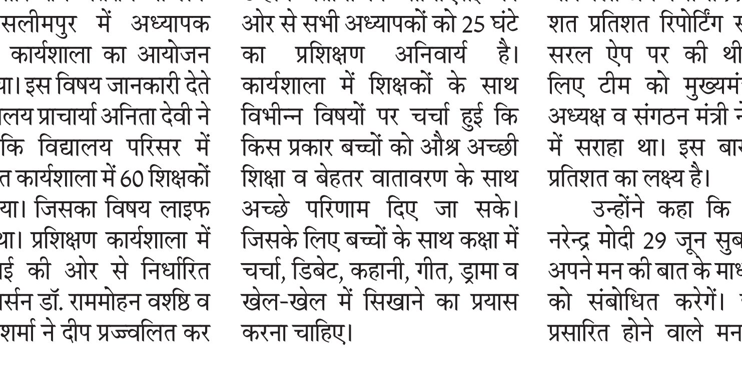

नारनौल। शादी में दिए जाने वाले सामान के साथ संस्था के सदस्य। फोटो : हरिभूमि

शहर की अग्रणी संस्था नेकी की दीवार नीडी हेल्प ग्रुप ने संस्था की मुहिम गरीब सुकन्या विवाह कन्यादान के अंतर्गत एक गांव की बिटियां का कन्यादान किया। इस जरूरतमंद परिवार की जानकारी संस्था के साथी भाई गजेंद्र ठेकेदार ने दी थी। इस परिवार की हालत बहुत ज्यादा नाजुक है, इसका संस्था ने विचार विमर्श करके सहयोग करने का निर्णय लिया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि ग्यारसी लाल सरपंच गांव थाना रहे। विशिष्ट अतिथि पूर्व जिला बाल कल्याण अधिकारी विपिन शर्मा, दलजीत गौतम शास्त्री, चेयरमैन यूएसएसएल एकेडमी राकेश यादव रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता मनीष गोगिया व संदीप जैन ने संयुक्त रूप से की। कार्यक्रम के संयोजक कुनाल शुक्ला, मनीष गर्ग अनिल शर्मा थे।

अतिथियों ने कहा कि आज के युग में अपने लिए समय निकालना बड़ा मुश्किल काम है, ऐसे समय में संस्था के साथी नेक कार्य को अंजाम दे रहे है। यह बहुत बड़ी बात है। इसके लिए सभी साथी बधाई के पात्र है। विपिन शर्मा ने कहा कि पिछले कई सालों से संस्था के संस्थापक मनीष गोगिया के सानिध्य में कन्यादान की मुहिम को सुचारू रूप से चलाया जा रहा है। इस मुहिम के अंतर्गत लगभग 450 बहनों का कन्यादान किया जा चुका है। इसके लिए मनीष गोगिया का आभार प्रकट करते हैं, जिन्होंने इस मुहिम को चलाया। जिसके माध्यम से गरीब एवं जरूरतमंद परिवार को सहायता मिल रही है। मनीष गोगिया ने कहा कि कन्यादान से बड़ा कोई दान नहीं होता है।

इस प्रकार के कार्यों को करने से खुशी तो होती है, साथ ने मन भी प्रसन्न होता है।

ये रहे मौजूद

इस मौके पर मनीष गोगिया, संदीप जैन, राकेश यादव, प्रवेश जांगिड़, अनिल शर्मा, विपिन शर्मा, दलजीत गौतम शास्त्री, गजेंद्र ठेकेदार, हिमाचल हलवाई, हिमांशु संघी, मनीष गर्ग, राकेश यादव मित्रपुरा, डॉ. प्रदीप एडीओ, कुनाल शुक्ला, सुनील शर्मा, सुनील गोयल, जयप्रकाश गोयल, संजय सैनी आदि मौजूद थे।

कार्यक्रम की शुरूआत में अतिथियों को पटका पहनाकर सम्मानित किया गया। इसके बाद बहन की शादी अच्छे से हो सके, इसके लिए सभी भाइयों ने मिलकर एक बार अपना फर्ज निभाते हुए कन्यादान में 51 बर्तन का सेट, लहंगा चुनरी, सूट साड़ियां, अटैची, प्रेस, कुकर, सीनरी, हॉट केस, बॉटल सेट फ्रीज वाली, थर्मस, बॉटल, पंखा, डबल बेड शीट, डबल बेड कम्बल, लेडीज पर्स, कप सेट, पैंट शर्ट, फैंसी स्लीपर, ट्रे सेट, वाटर कैम्पर, दीवार घड़ी, मिक्सी व नकद 501 रुपये का कन्यादान का सहयोग किया गया।

मास्टर मांगेराम तिवाड़ी के निधन से शोक की लहर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

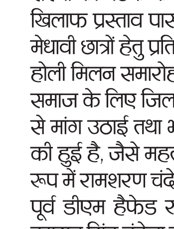

स्वर्गीय मांगेराम तिवाड़ी

प्रसिद्ध शिक्षाविद् 76 वर्षीय मास्टर मांगेराम तिवाड़ी का बीमारी के चलते अकस्मात निधन हो गया। उनके पार्थिव शरीर को शुक्रवार 27 जून शाम चार बजे मोड़ा आश्रम स्थित स्वर्गाश्रम में अंतिम विदाई दी गई। उनके ज्येष्ठ पुत्र प्रदीप शर्मा ने अंतिम संस्कार की क्रिया को निभाया। समाज में उनके व्यतित्व की झलक इसी बात से स्पष्ट होती है कि उनके अंतिम संस्कार में क्षेत्र के सभी समाज के सैकड़ों गणमान्य जनों ने उपस्थित रह कर शिक्षाविद् मास्टर मांगेराम तिवाड़ी की अंतिम यात्रा में शामिल होकर उन्हें अंतिम विदाई दी। वर्ष 1975 से नगर की प्रतिष्ठित शिक्षण संस्था लालाराधा कृष्ण पाठशाला में शिक्षक के पद पर अपनी शिक्षा के प्रति समर्पण यात्रा को प्रारंभ किया और अंतिम क्षणों तक भी पाठशाला के केयर टेकर के रूप में जुड़े रहे। नगर के अनेक सामाजिक और धार्मिक संस्थाओं में भी मास्टर मांगेराम तिवाड़ी का योगदान अविस्मरणीय रहेगा। वे अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गए है। उनकी प्रत्येक व्यक्ति को देखकर अभिवादन व मुस्कुराने की कला लोगों के हृदय अमिट छाप छोड़ दी। वे अपने पीछे दो विवाहित पुत्र और पुत्री, पोते पोती, नाते नाती छोड़ गए। उनकी अंतिम यात्रा में उनके बड़े भाई सत्यनारायण तिवाड़ी, महावीर तिवाड़ी, पूर्णमल शर्मा, रविशंकर तिवाड़ी, श्रीकिशन तिवाड़ी, याहा हरियाणा के निदेशक अनिल कौशिक, बसंत सेठ, सतीश तिवाड़ी, राकेश तिवाड़ी, बालकिशन तिवाड़ी, सुभाष तिवाड़ी, राजेश तिवाड़ी, अनिल तिवाड़ी, सुरेंद्र बंटी, सुशील बिढाठ, एमएल शर्मा, प्रमोद तिवाड़ी, शुभम तिवाड़ी, भावेश, नीरज तिवाड़ी, सतपाल शर्मा सहित अनेक लोग शामिल रहे।

सार्वजनिक सूचना

मै प्रभुदयाल पुत्र अर्जुन सिंह वासी अमरपुरा तहसील नांगल चौधरी जिला महेंद्रगढ हरियाणा बयान करता हूं कि मैने गोदनामा के जरिए एक पुत्र सुरेंद्र को गोद लिया हुआ है। मेरा उक्त दत्तक पुत्र सुरेंद्र व उसकी पत्नी सापना मेरे कहने सुनने से बाहर है व अपनी मनमानी करते है। इसलिए मै इनको अपनी चल–अचल संपत्ति से बेदखल करता हूं। भविष्य में इनसे लेनदेन करने वाला स्वयं जिम्मेदार होगा। मेरी व मेरे बाकि परिवार की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।

खबर संक्षेप

पुलिस ने गुमशुदा बच्चों को परिजनों से मिलाया

नारनौल। थाना शहर पुलिस को गश्त के दौरान दो बच्चे शहर क्षेत्र में लावारिस हालत में घूमते हुए मिले। बच्चों को थाना में लाकर उसके परिजनों से मिलवाने के प्रयास शुरू कर दिए। पुलिस ने बच्चों के परिजनों का पता लगाकर बच्चों को सकुशल उनके हवाले किया। दोनों बच्चे खोल रेवाड़ी क्षेत्र से शहर में आ गए थे। जिसकी जानकारी उनके परिजनों को नहीं थी। काफी देर तक बच्चों के घर न पहुंचने पर परिजन बच्चों की तलाश कर रहे थे। इसी दौरान थाना शहर पुलिस को गश्त के दौरान यह दोनों बच्चे मिले, पुलिस ने बच्चों से उनके नाम पता व माता पिता के बारे में पूछा और बच्चों से उनके परिजनों के मोबाइल नंबर लेकर उनको सूचित किया गया। पुलिस ने बच्चों को सकुशल उसके परिजनों को सौंप दिया।

192 गर्भवती महिलाओं को लगाए गए टीके

नारनौल। जिले में 23 से 28 जून तक चलाए गए स्पेशल प्रतिरक्षण सप्ताह के तहत लगभग 1315 बच्चों व 192 गर्भवती महिलाओं को टीके लगाए गए। यह जानकारी देते हुए सिविल सर्जन डॉ. अशोक कुमार ने बताया कि यदि किसी कारण से कोई बच्चा बिना टीकाकरण के वंचित रह गया हो तो वो अपने बच्चा का नजदीकी स्वास्थ्य संस्था पर कार्यरत एएनएम से मिलकर टीकाकरण करवा सकते हैं। उन्होंने बताया कि इसके अलावा जिले में 16 से 31 जूलाई तक दस्त रोको अभियान चलाया जा रहा है। जिसका लक्ष्य दस्तों की वजह से जीरों मृत्यु दर प्राप्त करना है। उन्होंने बताया कि गांवों में आशा वर्कर पांच साल तक के सभी बच्चों को ओआरएस के पैकेट तथा जिंक की गोलियां घर घर जाकर वितरित की जा रही है व ओआरएस का घोल बनाने की विधि बताई जा रही है। सिविल सर्जन ने आमजन से अनुरोध किया है कि बच्चें को दस्त होने पर अपने नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र में सम्पर्क करें और बच्चें को ओआरएस का गोल व जिंक की गोली अवश्य दें।

अवैध हथियार के साथ युवक काबू

नारनौल। सीआईए ने थाना नांगल चौधरी क्षेत्र से अवैध हथियार रखने

के मामले में गुप्त सूचना के आधार पर आरोपित राजेश वासी थनवास नांगल चौधरी को अवैध हथियार के साथ गिरफ्तार किया है। आरोपित से पुलिस ने एक अवैध देसी कट्टा व जिन्दा कारतूस बरामद किया। आरोपित के खिलाफ थाना नांगल चौधरी में आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया। आरोपित से पूछताछ कर न्यायालय में पेश कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। सीआईए टीम गश्त के दौरान नया बस स्टैण्ड नांगल चौधरी पर मौजूद थी, टीम को गुप्त सूचना मिली कि एक नौजवान लड़का राजेश वासी थनवास थाना नांगल चौधरी ढाकोडा बस स्टैंड के नजदीक खड़ा है और अवैध हथियार लिए हुए है। सूचना के आधार पर टीम उक्त स्थान के नजदीक पहुंची थी।

पुरानी हवेली भरभराकर गिरी, बड़ा हादसा टला, शहर में पुरानी हवेलियों की भरमार, प्रशासन नहीं दे रहा ध्यान

■ शहर के मोहल्ला मिश्रवाड़ा, पुरानी सराय, चांदुवाड़ा, संघीवाड़ा, पुरानी मंडी में अनेक पुरानी हवेलियां, सभी की हालत बहुत खराब

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

शहर में शनिवार सुबह एक पुरानी हवेली भरभराकर गिर गई। हवेली का अगला हिस्सा जाने वाले रास्ते में गिर गया। हालांकि गनीमत रही कि उस समय कोई भी वहां से नहीं गुजर रहा था, वरना कोई बड़ा हादसा हो सकता था। हवेली के मालिक शहर से बाहर रहते हैं। इसलिए उसका मलबा भी नहीं उठाया गया था। बता दें कि शहर के

नारनौल। भरभराकर गिरा पुरानी हवेली का हिस्सा। व शहर में स्थित पुरानी हवेली।

पुराने मोहल्ले संघीवाड़ा में अनेक पुरानी हवेलियां हैं। इनमें से ज्यादातर हवेलियों की हालत जर्जर हो चुकी है। जिनकी देखरेख करने वाला भी कोई नहीं है, क्योंकि इन हवेलियों के मालिक अनेक लोग व कुछ हवेलियों के मालिक दूसरे शहरों में जाकर रहने लग गए हैं। ऐसे में ये जर्जर हवेलियां कभी भी गिर सकती हैं। जिससे कोई भी बड़ा हादसा हो सकता है। शहर में इतनी पुरानी हवेली हैं कि हर साल कोई न कोई हवेली गिरने का हादसा होता रहता है।

जानकारी के अनुसार सेवानिवृत्त जिला न्यायाधीश की मोहल्ला संघीवाड़ा में एक पुरानी हवेली है। सेवानिवृत्त जिला न्यायाधीश का परिवार इन दिनों इंदौर में रहता है। इनके बेटे वहीं पर व्यापार करते हैं। शनिवार सुबह उनकी दशकों पुरानी हवेली का अगला हिस्सा अचानक भरभराकर गिर गया।

जिसका मलबा हवेली के अंदर व कुछ बाहर रास्ते में आ गिरा। जिस समय हवेली का हिस्सा गिरा, उस समय वहां से कोई नहीं गुजर रहा रहा था। जिससे कोई बड़ा हादसा होने से टल गया। लेकिन क्या आगे ऐसा नहीं होगा।

कभी हो सकता है हादसा

शहर के मोहल्ला शहर के मोहल्ला मिश्रवाड़ा, पुरानी सराय, चांदुवाड़ा, संघीवाड़ा व पुरानी मंडी में अनेक पुरानी हवेलियां हैं। इन हवेलियों की हालत बहुत ही खराब स्थिति में है। कई हवेलियों में तो लोग रह भी रहे हैं। ऐसे में इनके गिरने से कोई भी हादसा हो सकता है। पुरानी जर्जर हवेलियों में से अनेक हवेली हर साल बारिश के दिनों में गिरती हैं।

बारिश के मौसम में अक्सर गिरती रहती है हवेलियां

शहर के लोगों का कहना है कि मानसून के इस सीजन में दो से तीन बार अच्छी आरिश हो चुकी। ऐसे में हो सकता है छतों की सफाई नहीं होने के कारण पानी जमा हो गया होगा। जिससे छत में कोई दरार आ गई हो। जिसके चलते यह हवेली गिर गई हो। बता दें कि शुक्रवार सायं को भी करीब 10 से 15 मिनट तक शहर में अच्छी बारिश हुई थी, लेकिन जिस समय हवेली गिरी उस समय बारिश नहीं हो रही थी।

सहकारी श्रम एवं निर्माण समितियों को 1 करोड़ तक के कार्यों में मिलेगी प्राथमिकता

नारनौल। हरियाणा सरकार ने सहकारी श्रम एवं निर्माण समितियों को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए 27 जून को जारी गजट नोटिफिकेशन के तहत निर्णय लिया है कि एक करोड़ रुपये रुपये तक के सभी कुशल व अकुशल कार्यों में इन्हीं समितियों को प्राथमिकता दी जाएगी। सरकार के इस ऐतिहासिक फैसले से न केवल समितियों को आर्थिक मजबूती मिलेगी, बल्कि प्रदेश में बढ़ती बेरोजगारी पर भी अंकुश लगेगा। इस पर हरियाणा सहकारी श्रम एवं निर्माण समितियों के चेयरमैन नवल सिंह यादव ने मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी का आभार व्यक्त करते हुए कहा किए यह निर्णय प्रदेश की हजारों सहकारी समितियों के लिए संजीवनी साबित होगा। इससे युवाओं को अपने क्षेत्र में ही काम मिलेगा और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिलेगा।

सरकार पर मांगें नहीं लागू करने का आरोप, हड़ताल का निर्णय

9 जुलाई की राष्ट्रव्यापी हड़ताल में भाग लेंगे कर्मचारी, मीटिंग आयोजित

राज्य उपप्रधान अफलातून जाखड़ ने 9 जुलाई को प्रस्तावित एकदिवसीय राष्ट्रव्यापी सांकेतिक हड़ताल की तैयारी को लेकर विस्तार से चर्चा की।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

हरियाणा गवर्नमेंट पीडब्ल्यूडी मैकेनिकल वर्कर यूनियन (रजिस्टर्ड नं. 41) संबंधित सर्व कर्मचारी संघ की एक संयुक्त मीटिंग लोक निर्माण विभाग (भवन एवं मार्ग) रेस्ट हाउस में सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता जिला प्रधान कौशल यादव ने की, जबकि मंच का संचालन जिला सचिव विजेंद्र शर्मा ने किया। मीटिंग में राज्य उपप्रधान अफलातून जाखड़ व राज्य प्रचार सचिव सुबेसिंह

नारनौल। पीडब्ल्यूडी रेस्ट हाउस में मीटिंग करते कर्मचारी। फोटो : हरिभूमि

विशेष रूप से उपस्थित रहे।

इस मौके पर राज्य उपप्रधान अफलातून जाखड़ ने 9 जुलाई को प्रस्तावित एकदिवसीय राष्ट्रव्यापी सांकेतिक हड़ताल की तैयारी को लेकर विस्तार से चर्चा की तथा कहा कि यह हड़ताल देशभर की ट्रेड यूनियनों एवं जन संगठनों के आह्वान पर की जा रही है। जिला सचिव ने जानकारी देते हुए बताया कि सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग में रेशेनेलाइजेशन के नाम पर बेलदार, कैनाल गार्ड, हेल्पर, सुपरवाइजर, मैसन, अर्थ वर्क मिस्त्री, स्टोर कीपर, टेलीफोन अटेंडेंट, प्लंबर, चार्जमैन, फोरमैन सहित लोक निर्माण विभाग (भवन एवं सड़क) के मैकेनिकल विंग में कार्यरत कर्मचारियों के सैकड़ों पदों की कटौती की सिफारिश की गई है। यह सिफारिश न केवल नियमों की अनदेखी है, बल्कि इससे भविष्य में बेरोजगारी और विभागीय कार्यक्षमता पर भी विपरीत प्रभाव पड़ेगा। संगठन सरकार के इस निर्णय की घोर निंदा करता है और स्पष्ट करता है कि अगर इस पर पुनर्विचार कर यूनियन को बातचीत के लिए नहीं बुलाया गया तो कर्मचारियों के भारी रोष को देखते हुए एक बड़ा आंदोलन किया जाएगा।

नौ जुलाई की हड़ताल को बनाएंगे सफल

यूनियन ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि सभी नियमित व कच्चे कर्मचारी 9 जुलाई की हड़ताल में बढ़-चढ़कर भाग लेंगे और इसे पूर्ण रूप से सफल बनाएंगे। मीटिंग मे जिला उपप्रधान संजय यादव, जिला ऑडिटर ओमवीर सिंह, जिला कैशियर नरेंद्र कुमार, ब्रांच प्रधान परमवीर सिंह, ब्रांच प्रधान नरेंद्र कुमार, ब्रांच सचिव आदित्य, सचिव नवीन, ब्रांच सचिव अनिल, राजबीर, मनोज, सुरेंद्र यादव, अनिल कुमार व प्रदीप सैंकड़ों कर्मचारी मौजूद रहे।

सरकार को सौंपा जा चुका है 21 सूत्रीय मांगपत्र

मीटिंग में यह भी दोहराया गया कि संगठन पहले भी तीनों विभागों (सिंचाई विभाग, जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग तथा लोक निर्माण विभाग भवन एवं सड़कें) की प्रमुख मांगों को लेकर सरकार से लगातार संपर्क में रहा है। इनमें सभी प्रकार के कच्चे कर्मचारियों को नियमित करने की नीति बनाना, एचकेआरएन के हटाए गए कर्मचारियों को वेतन व पुनर्नियुक्ति, सेवा सुरक्षा सुनिश्चित करना, एचकेआरएनएल कर्मचारियों के वेतन में समय–समय पर वृद्धि, कॉमन केडर को रद्द कर विभागीय प्रमोशन, फील्ड कर्मचारियों के प्रमोशन में कंप्यूटर शर्त को हटाना, कैनाल गार्ड, गेज रीडर व मेट को तृतीय श्रेणी का दर्जा देना, टर्म अप्वाइंटी कर्मचारियों को 23,900 वेतनमान देना, कॉमन केडर के कर्मचारियों को विभागीय नियमों के तहत पदोन्नति, सरकारी भवनों/सड़कों का रख-रखाव विभागीय अमले से करवाना, खाली पदों को तुरंत भरना, सेवा नियमों व वेतन विसंगतियों को दूर करना, वर्दी धुलाई भत्ता मासिक वेतन के साथ देना शामिल है। इन मांगों को लेकर पहले भी सरकार को 21 सूत्रीय मांगपत्र सौंपा जा चुका है, लेकिन इनकी लगातार अनदेखी से कर्मचारियों में भारी असंतोष है।

नारनौल। पूर्व मंत्री एवं विधायक ओमप्रकाश यादव को ज्ञापन सौंपते कर्मचारी।

पूर्व मंत्री को कर्मचारियों ने उनके आवास जाकर सौंपा ज्ञापन, विस में उठाने की मांग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

हरियाणागवर्मेंट पी डब्ल्यू डीमैकेनिकल वर्कर्स यूनियन संबंधित हरियाणा संयुक्त कर्मचारी संघ ने शनिवार प्रातः पूर्व मंत्री एवं विधायक ओमप्रकाश यादव को उनके निवास स्थान जाकर एक ज्ञापन सौंपा तथा सरकार से इन मांगों को लागू कराने की मांग की। इस पर विधायक ने उन्हें इन मांगों को विधानसभा में सरकार के समक्ष उठाने का आश्वासन दिया। ज्ञापन जिला प्रधान रमेश चन्द्र यादव की अध्यक्षता में दिया गया। उन्होंने ज्ञापन में प्रमुख रूप से मांग की है कि हरियाणा कौशल रोजगार निगम, टर्म अपाइंटी, दैनिक भोगी, पंचायत के अधीन व अन्य सोर्स कर्मचारियों को 2024 अधिनियम के तहत नौकरी सुरक्षा प्रदान की जाए। कर्मचारियों को 2020 से 2023 तक की एलटीसी दी जाए। हरियाणा कौशल रोजगार निगम पर 31 मार्च 2022 की बजाए जुलाई 2022 से चढ़ाया जाए। केन्द्र के समान सभी वेतन व भत्ते लागू किए जाएं। 2016 से बकाया एचआरए का भुगतान किया जाए। ड्यूटी के दौरान दुर्घटना होने पर 30 लाख रुपये मुआवजा दिया जाए व परिवार के सदस्य को नौकरी दी जाए। मेडिकल कैशलैस की सुविधा पूर्ण रूप से लागू की जाए और इसमें आश्रितों को भी जोड़ा जाए। कैशलैस मेडिकल सुविधा सभी हरियाणा कौशल रोजगार निगम कर्मचारियों पर भी लागू की जाए। जो कि ईएसआई के दायरे से बाहर है, इन्हें भी शामिल किया जाए। इसमें पब्लिक हेल्थ विभाग व अन्य विभागों से सैकड़ों कर्मचारियों ने भाग लिया, जिसमें पूर्व केंद्रीय संगठन सचिव राधेश्याम शर्मा, कोषाध्यक्ष कैलाश सैनी, जिला उपप्रधान दलीप कुमार, जिला प्रेस सचिव रामशरण यादव, सुरेश कुमार, सुनील, राजेश, कृष्ण, परविंद्र, उमेद, जोगेंद्र, बलकेश, प्रेम, उमाशंकर, राजीव, अरविंद, सुधाकर आदि ने भाग लिया।

बिना भेदभाव के महेंद्रगढ़ विकास की राह पर अग्रसर: विधायक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

सरकार की जनहितेषी नीतियों का लाभ आज हर वर्ग को मिल रहा है। बिना भेदभाव के विकास कार्य प्रगति पर है। आने वाले दिनों में महेंद्रगढ़ विकास के मामले में काफी आगे होगा। उपरोक्त विचार शनिवार को महेंद्रगढ़ के विधायक कंवर सिंह ने लोगों की समस्याएं सुनते हुए उपस्थित लोगों के समक्ष कहें। इस दौरान उन्होंने जिला लोक संपर्क एवं जिला शिकायत निवारण समिति (ग्रीवेंस कमेटी)के मनोनीत सदस्य कमल सैनी को बधाई दी।

उपस्थित लोगों ने विधायक कंवर सिंह यादव व कमल सैनी का पगड़ी पहनाकर स्वागत किया। इस दौरान ग्रीवेंस कमेटी सदस्य कमल सैनी ने स्थानीय विधायक कंवर

महेंद्रगढ़। विधायक कंवर सिंह यादव को मिठाई खिलाते हुए।

सिंह के साथ-साथ अपनी नियुक्ति पर सीएम नायब सिंह सैनी, सांसद चौधरी धर्मवीर सिंह, जिला अध्यक्ष यतेंद्र राव का आभार व्यक्त किया। इस मौके पर लक्ष्मी नारायण सैनी, पूर्व पार्षद महावीर सैनी, ईश्वर सैनी आढ़ती, राजेश सैनी, कृष्ण आढ़ती, देवेंद सैनी, ओमप्रकाश सैनी, सुनील अग्रवाल, अजीत सैनी, बालकिशन पाथरोलिया व कृष्ण ठेकेदार सहित अन्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

गांव या क्षेत्र का विकास सड़क मार्गों पर निर्भर करता है: ओमप्रकाश यादव

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

किसी भी गांव या क्षेत्र का विकास वहां के बेहतर सड़क मार्गों पर निर्भर करता है। इसी योजना के साथ केंद्र व प्रदेश सरकार प्रदेश में बेहतर सड़क मार्गों को बढ़ाने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। उक्त बात विधायक एवं पूर्व मंत्री ओमप्रकाश यादव ने हरियाणा राज्य कृषि विपणन बोर्ड की ओर से दो करोड़ 15 लाख रुपये की लागत से विधानसभा में बनने वाली मोहनपुर से पधाना राजस्थान बार्डर, बापड़ोली से सौनियों की ढाणी व कारोता से खतौली जाट तक सड़कों का शिलान्यास करते हुए कही। इस अवसर पर पूर्व मंत्री ओमप्रकाश यादव ने लगभग 1.79 करोड़ रुपये की लागत से पंचायत में विभिन्न

नारनौल। सड़कों का शिलान्यास करते विधायक ओमप्रकाश यादव।

विकास कार्यों, 15 लाख रुपये की लागत से हरियाणा राज्य कृषि पूर्ण बोर्ड की ओर से सड़कों के मरम्मत के विशेष रास्तों का उद्घाटन भी किया। यादव ने कहा कि आज पूरे प्रदेश के साथ साथ विधानसभा क्षेत्र की सड़कों की स्थिति लगभग बेहतर हो चुकी है, कुछ मार्ग बचे हैं उन पर भी सरकार विशेष योजना बनाकर सिद्र ही कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि 2014 के बाद केंद्र व प्रदेश सरकार ने निरंतर ऐसी योजनाएं बनाकर गांवों में विकास कार्य किए हैं जो आम जनमानस को धरातल पर दिखाई देते हैं। इससे पूर्व की सरकारों ने कभी भी धरातल पर कोई काम नहीं किया और जिले में विकास रूपी पहिया रूक गया था।

अटेली में लगे सफेदे के पुराने पेड़ों को हटवाने की लेकर थाना प्रभारी को ज्ञापन सौंपा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| मंडी अटेली

अटेली थाना परिसर में लगे सफेदे के पुराने पेड़ों को हटवाने की मांग को लेकर शनिवार को मंडी अटेली के व्यापार मंडल के अध्यक्ष रतन गर्ग, नगर पालिका प्रधान संजय गोयल और सामाजिक कार्यकर्ता जितेंद्र सिंघल ने थाना प्रभारी इंस्पेक्टर देवेंद्र कुमार को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में लिखा गया कि ये पेड़ 50 साल से अधिक पुराने हैं। हाल ही में यह पेड़ काफी पुराने हो चुके हैं, ये पेड़ खोखले हो चुके हैं। इनकी लंबाई भी काफी अधिक हो चुकी है। इससे आसपास रहने वाले लोगों के लिए खतरा बना हुआ है। इसके लिए व्यापार मंडल के द्वारा वह नगर पालिका अध्यक्ष के द्वारा पत्र लिखकर पुराने पेड़ हटवाने का आग्रह किया है। पिछले तूफान में कुछ पेड़ गिरने से थाना बिल्डिंग

और वाहनों को काफी नुकसान हुआ था। आने वाले मानसून में ऐसी घटनाएं फिर दोबारा न हो, इसी को लेकर मंडी अटेली और आसपास के लोगों ने पुलिस अधीक्षक को थानेदार के माध्यम से ज्ञापन भेजा है। इस ज्ञापन के माध्यम से इन पेड़ों को जल्दी से जल्दी हटवाने की अपील की गई है। थाना प्रभारी देवेंद्र कुमार ने बताया कि इस संबंध में विभाग को पहले ही लिखा जा चुका है। अब दोबारा रिमाइंडर भेजा जाएगा। जल्द ही समाधान किया जाएगा।

नेशनल नारकोटिक्स हेल्पलाइन नं 1933 पूरी तरह से कार्यशील

नशे के कार्य में संलिप्त के बारे में हेल्पलाइन नंबर 1933 पर दें जानकारी

डीसी ने की युवाओं से अपील, नशे से दूर रहें नशा मुक्त अभियान को सफल बनाएं

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

जिला प्रशासन ने युवाओं व नागरिकों से अपील की है कि वे नशे जैसी बुराइयों से दूर रहें और नशा मुक्त भारत अभियान को सफल बनाने में अपना सक्रिय योगदान दें। नशे के कार्य में संलिप्त किसी भी व्यक्ति या समूह के बारे में जानकारी होने पर तत्काल हेल्पलाइन नंबर 1933 पर शिकायत दर्ज कराएं। उपायुक्त डॉ. विवेक भारती ने विशेष रूप से युवाओं से नशे के दुष्प्रभावों के प्रति सचेत रहने और स्वस्थ जीवन शैली अपनाने का आग्रह किया। उपायुक्त ने बताया कि केंद्रीय सरकार की ओर से

उपायुक्त डॉ. विवेक भारती।

नशीली दवाओं के दुरुपयोग के खिलाफ शुरू की गई नेशनल नारकोटिक्स हेल्पलाइन मानस 1933 अब हरियाणा राज्य में पूरी तरह से कार्यशील है। जिला प्रशासन ने नागरिकों से अपील की है कि वे नशे के कार्य में संलिप्त किसी भी व्यक्ति या समूह के बारे में जानकारी होने पर तत्काल हेल्पलाइन नंबर 1933 पर शिकायत दर्ज कराएं।

यह नंबर नागरिकों को त्वरित और गोपनीय तरीके से शिकायत दर्ज कराने की सुविधा प्रदान करता है, जिससे नशीली दवाओं के तस्करों के खिलाफ कार्रवाई की जा सके।उन्होंने बताया कि जिला प्रशासन ने सभी संबंधित विभागों को भी कहा है कि वे हेल्पलाइन नंबर 1933 के बारे में व्यापक प्रचार प्रसार करें, ताकि अधिक से अधिक लोग इस सेवा के बारे में जागरूक हों और नशीली दवाओं की तस्करी की रिपोर्ट कर सकें।

2047 तक भारत को नशा मुक्त राष्ट्र बनाना

इस संबंध में सामाजिक न्याय, अधिकारिता, अनुसूचित जाति एवं पिछड़े वर्ग कल्याण एवं अंत्योदय विभाग हरियाणा की ओर से जारी पत्र का हवाला देते हुए जिला समाज कल्याण अधिकारी अमित शर्मा ने बताया कि इस पहल का मुख्य उद्देश्य नशे के खतरे से समाज को बचाना और विशेष रूप से युवा पीढ़ी को इसके चंगुल से मुक्त करना है। सरकार का लक्ष्य 2047 तक भारत को नशा मुक्त राष्ट्र बनाना है, इसमें जनभागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि नशा न केवल व्यक्ति के स्वास्थ्य और भविष्य को बर्बाद करता है, बल्कि यह परिवार और समाज पर भी नकारात्मक प्रभाव डालता है। हमें अपने युवाओं को इस दलदल में फंसने से बचाना होगा और उन्हें एक उज्ज्वल भविष्य की ओर प्रेरित करना होगा। उन्होंने आगे कहा कि हम सभी की जिम्मेदारी है कि हम अपने आसपास नशे के खिलाफ एक मजबूत दीवार खड़ी करें। हेल्पलाइन नंबर 1933 इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है और सभी नागरिकों से इसका उपयोग करने व इस लड़ाई में सहयोग करने का आग्रह करते है।

पर्यटन स्थल के रूप में विकसित होगा देवनगर का बांध, मिनी झील बनाने की योजना

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

गांव देवनगर की ग्राम पंचायत की ओर से गांव के बांध को पर्यटन स्थल को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की योजना तैयार की है। ग्राम पंचायत की ओर से बांध के साथ 50 से 80 फीट का टीनशेड़ लगाकर उसमें कुर्सियां लगाई जाएंगी। इसके अलावा डिवाईन वाली झोपड़ी लगाकर आसपास के लोग महेंद्रगढ़ में पर्यटन का आनंद ले सकें।

बता दें कि सिंचाई विभाग की ओर से गत वर्ष दोहान नदी पर 11 मीटर की दूरी पर बांध बनाया गया था, जिसमें करीब 3 करोड़ 7 लाख रुपये की लागत आई थी। इस बांध की चौडाई करीब 300 से 500 मीटर है। यह बांध पूरी तरह से मिनी झील की तरह नजर आता है। आसपास के ग्रामीण अक्सर गर्मी के मौसम

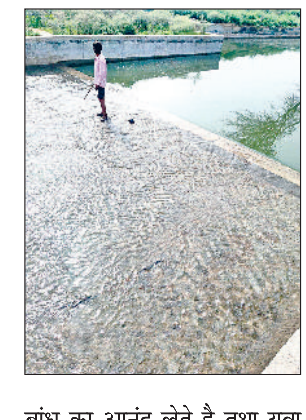

बांध का आनंद लेते है तथा युवा यहां तैराकी करते है। बांध के प्रति लोगों की रूचि को देखते हुए ग्राम पंचायत की ओर से बांध को मिनी झील के रूप में विकसित करने की योजना तैयार की है।

आसपास के लोगों को मिलेगा रोजगार:

ग्राम पंचायत की ओर से बांध के साथ लगती वन विभाग की जमीन पर लगे पेड़ो की कटाई की अनुमति ली जाएगी तथा इनकी जगह अच्छी किस्म के पेड़ लगाने की योजना बना रहे है, ताकि राजस्थान के कई शहरों के घूमने के लिए जाने वाले लोग महेंद्रगढ़ जिले में भी पर्यटन का आनंद ले सकें।

जिला में महेंद्रगढ़ का पुराना किला, माधोगढ़ की पहाड़ी, ढोसी की पहाड़ी, बीरबल का छत्ता, चोर गुबंद, जल महल, शाह कुली खां का मकबरा, मिर्जा अली की बावड़ी सहित अनेक ऐतिहासिक स्थल हैं। ऐसें राजस्थान में जाने वाले लोग समय यहां घूमने की काफी उम्मीदें हैं। अगर इन पर्यटन स्थानों का विकास होता है तो इस क्षेत्र में व्यापार एवं रोजगार की संभावनाएं बढ़ेगा तथा महेंद्रगढ़ जिला को देश के पर्यटन मानचित्र पर अलग पहचान मिलेगी।

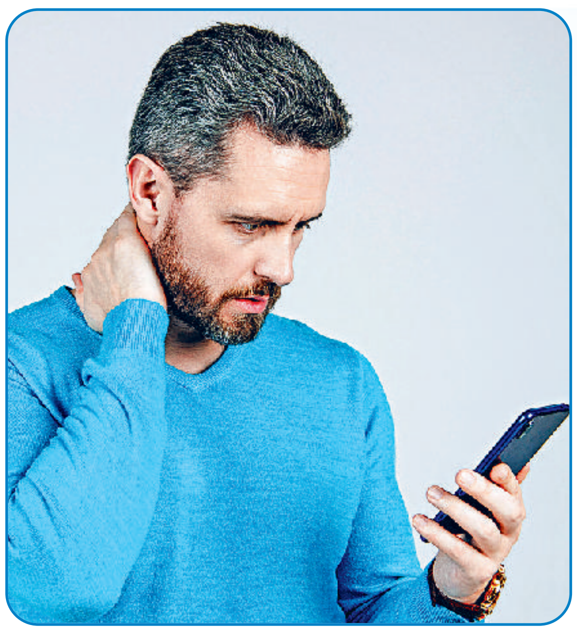

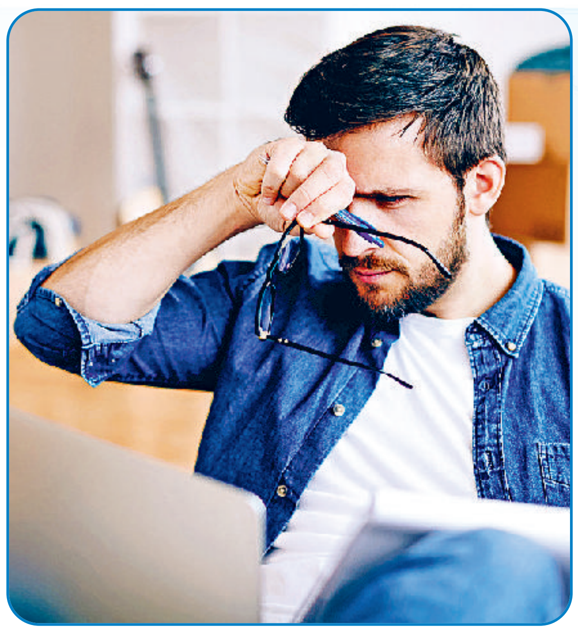

स्पेशल: वर्ल्ड सोशल मीडिया डे
30 जून

इन दिनों हर उम्र के लोग सोशल मीडिया के एडिक्शन में उलझे हुए हैं। इस एडिक्शन से घंटों गैजेट्स से चिपके रहने और गलत अंदाज में उसे ऑपरेट करने से कई तरह की फिजिकल प्रॉब्लम्स लोगों को अपनी गिरफ्त में ले रही हैं। यही नहीं इसकी लत लोगों को मानसिक रूप से भी बीमार बना रही है। वो कौन सी बीमारियां हैं और इनसे बचने के लिए क्या उपाय अपना सकते हैं, इस बारे में आपको जरूर जानना चाहिए।

तन-मन को कर रहा बीमार

सोशल मीडिया एडिक्शन

कवर स्टोरी
डॉ. मोनिका शर्मा

आमतौर पर सोशल मीडिया एडिक्शन के नेगेटिव इफेक्ट्स को मानसिक सेहत से ही जोड़कर देखा जाता है। परिचित-अपरिचित लोगों की सुंदर तस्वीरों और अच्छी-बुरी सूचनाओं का मेल मन को नकारात्मक रूप से प्रभावित भी करता है। यहां ध्यान रखना जरूरी है कि सोशल मीडिया में हर तरह के कंटेंट को देखते रहना फिजिकल हेल्थ पर भी बुरा असर डालता है। शरीर के बहुत अंग स्क्रीन स्क्रॉलिंग को दिए जाने वाले समय के नेगेटिव असर को झेलते हैं।

स्किन-विजन पर दुष्प्रभाव

सोशल मीडिया अपडेट्स को देखने के लिए हरदम स्क्रीन में झांकते रहना, आंखों की रोशनी छीन रहा है। बच्चे-बड़े सभी की आईसाइट कमजोर हो रही है। आंखों में सूखापन, थकान और दूसरी समस्याएं बढ़ रही हैं। रात को सोते समय कम रोशनी में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को स्क्रॉल करना तो आंखों पर सबसे ज्यादा दुष्प्रभाव डाल रहा है। वर्चुअल वर्ल्ड में पल-पल दिखती दूसरों की अपडेट्स इतनी इंटरेस्टिंग लगती हैं कि बिना ब्रेक स्मार्ट फोन की स्क्रीन में देखते रहने की लत लग जाती है। रिसर्च फर्म 'रेडसियर' के अनुसार हमारे यहां हर यूजर हर दिन औसतन 7.3 घंटे अपने स्मार्टफोन की स्क्रीन पर बिता रहा है। इसमें से ज्यादातर टाइम सोशल मीडिया पर बीत रहा है। इस डिजिटल व्यस्तता से सिरदर्द के साथ ही आंखों में तनाव एवं थकान भी बढ़ती है। मौजूदा समय में अधिकतर यूजर्स की आंखें यह डिजिटल स्ट्रेस झेल रही हैं। अंधेरे में भी स्क्रीन स्क्रॉल करने की आदत ना केवल तेजी से नजर कमजोर करती है बल्कि आंखों के नीचे डार्क सर्कल्स का भी कारण बनती है। इतना ही नहीं कई लोगों को स्मार्ट फोन से निकलने वाली ब्लू लाइट से चेहरे पर डार्क स्पॉट और पिगमेंटेशन की समस्या हो सकती है। असल में ब्लू लाइट त्वचा के रोम-रोम में समाते हुए स्किन में खुजली, रूखापन और टैनिंग की समस्या की भी वजह बनती है।

बिगड़ता बॉडी पोश्चर

पार्क में वॉक करते हुए, बिस्तर पर आराम करते हुए, गाड़ी चलाते हुए या जिम में एक्सरसाइज करते हुए। लोग हर समय स्मार्ट गैजेट्स की स्क्रीन खंगालते रहते हैं। इसका कारण सोशल मीडिया में मौजूदगी दर्ज करवाना ही है। असल दुनिया में अनुपस्थित होने से एक ओर उस समय की जा रही एक्टिविटी पर फोकस नहीं करते तो दूसरी ओर शरीर के विशेष अंगों पर अधिक दबाव भी पड़ता है। फोन की स्क्रीन में नीचे की तरफ देखते रहने से टेक नेक की समस्या बढ़ रही है। यह हेल्थ प्रॉब्लम गर्दन में दर्द, अकड़न और सिरदर्द से जुड़ी है। साथ ही स्क्रीन स्क्रॉलिंग बैक पेन और कंधों के दर्द से जुड़ी परेशानियों की भी वजह साबित हो रही है। आड़े-टेढ़े बॉडी पोश्चर में लोग घंटों सोशल मीडिया देखते रहते हैं। लगातार गलत शारीरिक स्थिति में बैठने से कई हड्डियों से जुड़ी समस्याएं पैदा हो रही हैं। सोशल मीडिया अपडेट्स देखते हुए लोग कुछ न कुछ लिखते भी हैं। गलत पोश्चर में टाइपिंग करने से 'टेक्स्ट नेक' की परेशानी बढ़ रही है। ध्यान रहे कि इंसानी शरीर पर अपने सिर का वजन 4.5 किलो से 5.4 किलो तक होता है। लेकिन फोन देखने के लिए गर्दन झुकाने पर ग्रैविटी के कारण सिर पर पड़ने वाला भार करीब 27 किलो तक हो जाता है। फोन को हरदम हाथ में थामे रहने से कलाई और स्क्रॉलिंग से अंगूठे में दर्द और नर्व्स में सुन्नपन की तकलीफ भी होने लगती है।

शारीरिक निष्क्रियता

हाल के वर्षों में सोशल मीडिया पर बीत रहे समय ने हर एजग्रुप के लोगों की फिजिकल एक्टिविटी कम कर दी है। इससे कम उम्र में ज्वॉइंट पेन और शरीर की जकड़न जैसी परेशानियां आ रही हैं। असल में हड्डियों के ज्वॉइंट्स में सूजन बढ़ना जकड़न और दर्द का अहम कारण होता है। फिजिकली एक्टिव ना रहना इस परेशानी को बढ़ाता है। बफेलो यूनिवर्सिटी की स्टडी के अनुसार सोशल मीडिया का हद से ज्यादा इस्तेमाल से सी-रिएक्टिव प्रोटीन का स्तर बढ़ सकता है। यह स्थिति ज्वॉइंट्स में सूजन बढ़ने से जुड़ी है। सी-रिएक्टिव प्रोटीन का स्तर बढ़ना शारीरिक अंगों में दर्द ही नहीं हृदय रोग और मधुमेह जैसी गंभीर हेल्थ इश्यूज की जड़ भी बन सकता है। देखने में आ रहा है कि पल-पल सामने आती रील्स, मीम्स देखते हुए गुजर रहा समय बेवजह की व्यस्तता का कारण बन गया है। इसके कारण लोगों में मोटापा भी बढ़ रहा है। शारीरिक छवि के मोर्चे पर सोशल मीडिया में दिखती तस्वीरों और वीडियोज के कारण बच्चों से लेकर बड़ों तक, अपने ही शरीर की बनावट के प्रति नापसंदगी की सोच भी आ रही है। ऐसे में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर बीत रहे समय को सीमित करना आवश्यक है। साथ ही समय-समय पर ब्रेक लेना और स्मार्ट गैजेट्स इस्तेमाल करते हुए बॉडी पोश्चर को सही रखना भी अहम है। *

बिगड़ रही मानसिक सेहत

सोशल मीडिया एडिक्शन का हमारी मेंटल हेल्थ पर भी बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे स्ट्रेस, डिप्रेशन, एंग्जाइटी और चिड़चिड़ेपन की समस्याएं लोगों में काफी बढ़ने लगी हैं। लोग घर में रहते हुए भी एक दूसरे से कम बात करते हैं। सोशल इंटरेक्शन कम होता जा रहा है। अपनी रियल लाइफ के बजाय वर्चुअल लाइफ को इंप्रेसिव बनाने के ज्यादा प्रयास किए जाते हैं। इससे स्ट्रेस का स्तर बढ़ता है। ऐसे में सोशल मीडिया का कंट्रोल्ड यूज करना मेंटल हेल्थ के लिए भी बहुत जरूरी है।

टेक्नोबिहेवियर
नौशाबा परवीन

सोशल मीडिया यूजर्स

एटिकेट्स का रखें ध्यान

लगभग दो दशक की अपनी विकास यात्रा में सोशल मीडिया ने समाज के बहुत बड़े वर्ग को प्रभावित किया है। लेकिन इसके पॉजिटिव यूज के साथ जमकर मिसयूज भी किया जाता है। इसके एटिकेट्स के बारे में न केवल आपको पता होना चाहिए, उसे फॉलो भी करना चाहिए।

इस बात में कोई संदेह नहीं कि सोशल मीडिया ने लोगों के परिवार, दोस्तों और दुनिया के साथ बातचीत, संवाद और साझा करने के तरीकों को नए सिरे से परिभाषित किया है। हमारे जीवन में सोशल मीडिया के महत्व का अंदाजा दो मुख्य बातों से लगाया जा सकता है। एक, संकोची स्वभाव के जो लोग महफिलों में कुछ कह नहीं पाते थे, वह भी सोशल मीडिया पर खुलकर अपने विचार रखते हैं बल्कि अपनी हर बात कह लेते हैं, क्योंकि यह माध्यम 'पर्दे के पीछे' से भी अपने विचार (अच्छे या बुरे) व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है। दूसरा यह कि सोशल मीडिया के जरिए राजनीतिक दलों से लेकर आम आदमी तक लोगों को इंफ्लुएंस (प्रभावित) करने का प्रयास करते हैं। इस वजह से इंफ्लुएंसर्स की एक नई जमात खड़ी हो गई है, विशेषकर इसलिए कि सोशल मीडिया, कंटेंट क्रिएटर्स को अच्छा पैसा कमाने का मौका भी देता है। इन महत्व के चलते मां दिवस, पिता दिवस आदि की तरह हर साल 30 जून को सोशल मीडिया दिवस भी मनाया जाने लगा है, जिसकी शुरुआत 2010 में मेंशेबल ने की थी।

ऐसे होता गया पॉपुलर: सोशल मीडिया के पॉपुलर होने का सिलसिला 2002 में फ्रेंडस्टर और 2003 में माईस्पेस के लांच होने से शुरू हुआ और इसके बाद 2004 में सोशल मीडिया के सबसे पॉपुलर प्लेटफॉर्म फेसबुक की स्थापना हुई। ट्विटर (जो अब एक्स हो गया है) ने हमें संक्षिप्त होने के लिए प्रोत्साहित किया कि 140 से कम अक्षरों में ही अपने विचार व्यक्त करने हैं। जिसे बाद में बढ़ाकर 280 कर दिया गया। इंस्टाग्राम और फ्लिकर ने ऐसी इमेजरी के जरिए खुद को व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया, जिसे हम संभाल सकते हैं। अगर वीडियो की बात करें तो टिक-टॉक और यू-ट्यूब मौजूद हैं। अभिव्यक्ति के लिए जब इतने मंच हों तो सोशल मीडिया दिवस मनाना आसान हो जाता है कि अपने पसंदीदा प्लेटफॉर्म पर कुछ पोस्ट किया जाए, मीम शेयर किए जाएं या किसी ऐसे व्यक्ति से जुड़ें जिससे लंबे समय से बात नहीं हुई है। अब तो अलग-अलग शहरों में सोशल मीडिया मीटिंग्स के जरिए भी इसकी पॉपुलैरिटी का जश्न मनाया जाता है।

होता है भरपूर मिसयूज: कोई चीज कितनी ही अच्छी क्यों न हो, उसका एक बुरा पहलू भी होता है। सोशल मीडिया भी इसका अपवाद नहीं है। अपने फॉलोवर्स बढ़ाने के उद्देश्य से अनेक कंटेंट क्रिएटर्स फेक न्यूज, क्लिक बेट (यानी वीडियो पर ऐसा थंब नेल लगाना, जिसका कंटेंट में जिक्र ही न हो) आदि का प्रयोग करते है। गलत धार्मिक या जातिगत आधारित कंटेंट से लोगों की भावनाओं को भी ठेस पहुंचाया जाता है। सोशल मीडिया पर झूठ बहुत बड़ा कारोबार है। इसे रोकने के लिए नियम और कानून अवश्य हैं, लेकिन इनका उल्लंघन भी काफी किया जाता है। साथ ही सरकारें और सामाजिक-राजनीतिक संगठन भी कंटेंट को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं। अनेक कंटेंट क्रिएटर्स को जेल की हवा तक खानी पड़ी है। दुखद है कि महिलाओं को भी सोशल मीडिया के जरिए तरह-तरह से परेशान किया जाता है। कभी धमकी देकर, कभी ब्लैक मेलिंग, कभी धोखेबाजी में फंसाकर तो कभी उनके द्वारा पोस्ट किसी कंटेंट के लिए ट्रोलिंग के जरिए उन्हें प्रताड़ित करने का ट्रेंड काफी बढ़ गया है। चिंताजनक यह है कि कई बार तो कुछ लोग इतने असहनशील हो जाते हैं कि किसी कंटेंट के लिए हत्या करने जैसा जघन्य अपराध भी करने से नहीं कतराते। इक्कीसवीं सदी के ढाई दशक गुजरने और तकनीक के इतने विकसित दौर में समाज की ऐसी संकीर्ण सोच, विचारणीय है। सोशल मीडिया दिवस का जश्न मनाना तब ही अच्छा और सार्थक लगेगा, जब हम प्रण लें कि महिलाओं की ऑनलाइन ट्रोलिंग नहीं करेंगे और उनके विरुद्ध किसी भी तरह की हिंसा और अपराध का विरोध करेंगे।

ना भूलें ये एटिकेट्स: सोशल मीडिया का पॉजिटिव यूज करने के लिए उसे ऑपरेट करते समय इसके कुछ एटिकेट्स को याद रखा जाना चाहिए। जैसे-ऑनलाइन बातचीत करते समय अपनी रियल आइडेंटिटी में रहें। किसी से फ्रेंडशिप करने के लिए पहले उसके विचारों को कंटेंट को समझें, लाइक करें, कमेंट करें फिर दोस्ती की तरफ आगे बढ़ें। ऑनलाइन चैटिंग करते समय विनम्र और पेशेवर लहजे का प्रयोग करें। ऑनलाइन कंटेंट साझा करते समय मूल स्रोत की विश्वसनीयता को परख लें। *

कविता
हरीश कुमार 'अमित'

सब्र

मुश्किल यही है कि
होता जा रहा है सब्र
कम, और कम।
किसी बड़ी बात के लिए
सब्र खो देने की बात
तो आती है समझ,
मगर कई बार तो
खो बैठता है सब्र कोई आदमी
बिल्कुल छोटी-सी बात पर ही।
रखा जाए सब्र अगर
तो बचा जा सकता है
बहुत-सी उलझनों से।
रखा जाए सब्र अगर
तो सुलझ जाती हैं
कुछ उलझनें
अपने आप ही
वक्त बीतने के साथ-साथ।
वाकई बहुत काम की
चीज है सब्र।

व्यंग्य / संदीप भटनागर

मुर्गे और खंजर

मुर्गों की किस्मत में मुर्गियां कम, खंजर ज्यादा होते हैं। ये खंजर कभी उनकी गर्दन पर होते हैं तो कभी पांव में बंधे। यह समझना आसान है कि दुनिया में पहले मुर्गा आया होगा फिर खंजर।

छुट्टी का दिन होने के नाते सामने वाले मैदान में चहल-पहल कुछ ज्यादा थी। बड़े से मैदान का एक कोना मुर्गेबाजों के लिए रिजर्व रहता है। सामान्य तौर पर यह जगह मुर्गा बाजार के रूप में जानी जाती है, जहां आम दिनों में मुर्गों की खरीद-फरोख्त होती है और छुट्टी के दिन खरीदे गए मुर्गों की जोर-आजमाइश।

लड़ने वाले मुर्गों की कीमत से कई गुना ज्यादा पैसे दांव पर लग जाते हैं।

मेरे लिए यह जानना रोचक था कि जिंदा रहते हुए लड़ते मुर्गे देश की जी.डी.पी. में कितना योगदान करते हैं? मुर्गा बाजार में खंजर बेचने वाला भी बैठता है। आम दिनों में उसके पास सामान्य खंजर होते हैं लेकिन मुर्गेबाजी वाले दिन उसके पास मुर्गों के पांव में बांधने वाले विशेष खंजर होते हैं। मुर्गों के मालिक से लेकर दांव लगाने वाले तक अपनी पसंद के मुर्गों के लिए एक से एक कातिल खंजर खरीदते हैं ताकि वो प्रतिद्वंद्वी मुर्गे को ज्यादा से ज्यादा चोटिल कर मुकाबला जीत सके।

जी-जान से लड़ने वाले मुर्गे यह नहीं जानते कि जिबह तो हारने वाले और जीतने वाले दोनों मुर्गों को होना ही है। किसी को आज तो किसी को कल। इस मुकाबले में लड़ाने वालों की अपनी साख और प्रतिष्ठा दांव पर लगी होती है और तमाशबीनों का पैसा, जबकि लड़ने वाले मुर्गों की अपनी जान दांव पर लगी होती है। पूरे तमाशे में खंजर बेचने वाले के खंजरों की मारक क्षमता भी दांव पर लगती है। जितना मारक खंजर उतनी ज्यादा डिमांड।

बावजूद इसके इस पूरे खेल में हमेशा खंजर बेचने वाला ही फायदे में रहता है। वह खंजर हारने वाले को भी बेचता है, जीतने वाले को भी बेचता है और दांव लगाने वालों को भी। मुर्गेबाजी का इतिहास सिंधु घाटी सभ्यता से भी पुराना है। इंसान ने अपने मनोरंजन के लिए मुर्गों को लड़ना सिखाया था। मानव सभ्यता के विकास के साथ मुर्गेबाजी के इस तरीके को क्रूर मानते हुए इसे असभ्य करार दे दिया गया। विकसित होती दुनिया में इसे अब नए ढंग से खेला जाने लगा। नवीन खेल में मुर्गों को मुर्गे होने का अहसास नहीं होने दिया जाता। लगातार उन्हें ऐसा महसूस कराया जाता है कि तुम्हारे अस्तित्व के लिए तुम्हें लड़ना जरूरी है। नवीन खेल में कमजोर मुर्गों पर भी दांव लगाया जाने लगा, जिन्हें विकसित भाषा में इन्वेस्टमेंट कहा जाने लगा। उनके माध्यम से आधुनिक खंजरों का परीक्षण कर दुनिया में दूसरे मुर्गों को बेचा जाने लगा। कुछ मुर्गों को अत्याधुनिक खंजरों से लैस कर इतना शक्तिशाली बना दिया गया कि वो अब अपने मालिक के इशारे पर लड़ने के बहाने तलाश कर किसी भी मुर्गे से लड़ने को तैयार रहते हैं।

खंजर के सौदागरों ने पूरी दुनिया को मुर्गेबाजी का अखाड़ा बना दिया। खेल में रोज हलाक होने वाले जानवर नहीं इंसान हैं इसलिए इस नए खेल पर दुनिया का कोई भी पशु क्रूरता अधिनियम लागू नहीं होता।

इस नए खेल में आज भी पुराने खेल के कुछ नियम लागू हैं। यह खेल अभी भी मालिकों की प्रतिष्ठा और ईगो के लिए खेला जा रहा है। इस खेल में आज भी खंजर के सौदागर नफे में हैं। वे कमजोर और शक्तिशाली दोनों मुर्गों को अपने खंजर बेच कर मुनाफा पीट रहे हैं। आज भी जिंदा लड़ते मुर्गे खंजर बनाने वाले मालिकों के देश की जी.डी.पी. को बढ़ा रहे हैं और जो मुर्गे लड़ नहीं रहे हैं, वो अपनी बारी का इंतजार कर रहे हैं। *

लघुकथा
अशोक वाधवाणी

दिव्यांग का सम्मान

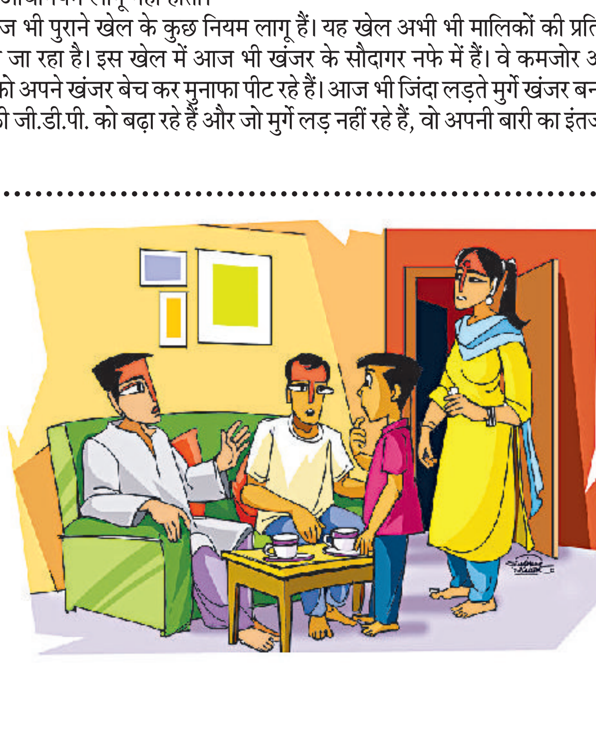

आलोक किसी काम के सिलसिले में एक जान-पहचान वाले दंपती के घर पहुंचे। औपचारिक अभिवादन और चाय-पानी के बाद उनसे बातचीत में व्यस्त हो गए। इतने में छठी कक्षा में पढ़ने वाला उनका बेटा बाहर से घर के अंदर आया। वह सीधे ड्रॉइंग रूम में पहुंचा जहां आलोक उसके मम्मी-पापा के साथ बैठे थे। आते ही उसने अपनी मां के हाथ में दो सौ रुपए का नोट पकड़ाते हुए बोला, 'मम्मी, वो जो पड़ोस में अंधी खुशबू दीदी रहती हैं न, उन्होंने ये पैसे दिए हैं।'

किसी दिव्यांग के बारे में इस तरह के बोल सुनकर आलोक को बहुत बुरा लगा। उसने बच्चे को प्यार से समझाया, 'देखो बेटा, किसी की शारीरिक कमजोरी का ऐसे मजाक नहीं उड़ाते हैं। विकलांग लोगों को आजकल दिव्यांग कहकर पुकारा जाता है, यह एक पॉजिटिव सोच की निशानी है। संबोधन बदलने के बाद भी लोगों के व्यवहार में कोई सुधार नहीं हुआ है, जो गलत बात है। उसके माता-पिता ने बड़े चाव से अपनी बेटी का सुंदर सा नाम रखा होगा खुशबू! बेटा, तुम्हें हर किसी दिव्यांग का नाम पूरे मान-सम्मान के साथ लेना चाहिए। सिर्फ खुशबू दीदी भी तो कह सकते थे।'

'हमारे घर में सभी उन्हें अंधी खुशबू ही तो कहते हैं।' बच्चे ने बड़े भोलेपन से बताया।

आलोक ने दंपती की ओर देखा, वे दोनों उससे नजरें नहीं मिला पा रहे थे। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

बहुरंगी गजलों का कोलाज

वेद मित्र शुक्ल दिल्ली विवि में अंग्रेजी पढ़ाते हैं लेकिन वे अंग्रेजी के साथ ही हिंदी साहित्य में रचनात्मक रूप से काफी सक्रिय हैं। इसका प्रमाण हैं, कई विधाओं में प्रकाशित उनकी मौलिक और संपादित ढेरों पुस्तकें। कुछ समय पहले उनका दूसरा गजल संग्रह 'दरिया की बातें पत्थर से' प्रकाशित हुआ है। इसमें उनकी गजलगोई के कई आयाम देखे जा सकते हैं। समय, समाज और जीवन के बेशुमार स्याह-श्वेत पहलू इन गजलों में उजागर हुए हैं। कहीं वे बढ़ते शहरीकरण के चलते बिखरते रिश्तों की टीस बयां करते हैं, *'गांवों से आ बसे शहर में खोए हैं सब रिश्ते नाते/गीतों में ही देवर-भाभी, जीजा-साली होली खेलें।'* तो कहीं समाज में छीजती जा रही मनुष्यता को लेकर वह अपनी चिंता ऐसे प्रकट करते हैं, *'तिल रखने की जगह नहीं पर/ अच्छे लोग बहुत ही कम हैं।'* इसी तरह वे राजनीतिज्ञों के चारित्रिक अवमूल्यन को बेबाकी से बयां करते हैं, *'गांधी का इक दौर रहा था/घिन आती है अब खद्दर से।'* यानी जीवन के लगभग हर पक्ष पर वे गहरी नजर रखते हैं और अपने जज्बातों को बयां करने के लिए सटीक तासीर के शब्दों को गजल में पिरो देते हैं।

कह सकते हैं यह किताब वेद मित्र शुक्ल की बहुरंगी गजलों के कोलाज जैसी है। *

पुस्तक: दरिया की बातें पत्थर से (गजल संग्रह)
लेखक: डॉ. वेद मित्र शुक्ल, **मूल्य:** 290 रुपए,
प्रकाशक: सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

भारत की विविधतापूर्ण संस्कृति का अनूठा केंद्र है अलाप्पुझा। बैकवाटर्स पर्यटन, यहीं नहीं पूरे केरल की पहचान है। यहां का मोहक प्राकृतिक सौंदर्य, इसकी ऐतिहासिक-सांस्कृतिक विशिष्टता में चार चांद लगा देता है। यही वजह है कि मानसून में इस जगह का आनंद लेने के लिए दुनिया भर से पर्यटक आते हैं।

इस मानसून में घूम आएं भारत के वेनिस अलाप्पुझा

टूरिस्ट स्पॉट / लोकमित्र गौतम

कोई शहर छोटा हो या बड़ा या चाहे कोई कस्बा ही क्यों न हो, हर शहर, हर महानगर और हर कस्बे की अपनी एक निजी पहचान, एक निजी विशेषता होती है, जो हर दूसरी जगह से अलग होती है। यही उस जगह की पहचान होती है, उसका लैंडमार्क कहलाता है। भारत के वेनिस कहे जाने वाले शहर अलाप्पुझा को 'बैकवाटर्स का स्वर्ग' कहा जाता है। यही यहां का लैंडमार्क माना जाता है।

घूमने के लिए बारिश है बेस्ट: भारत दुनिया के उन गिने-चुने देशों में से एक है, जहां हर मौसम के लिए विशिष्ट पर्यटन क्षेत्र को मुफीद माना जाता है। अगर भारत के पहाड़, गर्मियों में घूमने के लिए स्वर्ग हैं और भारत के समुद्रतट सर्दियों की गरमाइश भरी पसंदीदा जगहें हैं तो मानसून में घुमक्कड़ी का लुत्फ लेने के लिए केरल, पर्यटन का स्वर्ग कहा जाता है। लेकिन इस केरल में भी एक खास पर्यटन क्षेत्र है, अलेप्पी या अलाप्पुझा जिसे भारत के बैकवाटर्स का स्वर्ग कहा जाता है। इसे पूर्व का वेनिस भी कहते हैं। यहां के हाउसबोट (कुट्टनाड क्षेत्र में) पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हैं।

इसलिए अलाप्पुझा है विशिष्ट: केरल में यूं तो पूरे प्रदेश में ही बैकवाटर्स के अदभुत नजारे हैं- झीलें, नहरें, नदी तंत्र और तटीय लैगून ये सब मिलकर केरल को एक अद्भुत जल प्रदेश बनाते हैं। लेकिन केरल में भी जिस शहर को बैकवाटर्स स्वर्ग के नाम से जानते हैं, वो है- अलेप्पी या अलाप्पुझा। आज के अलाप्पुझा को अंग्रेजों के जमाने में अलेप्पी कहा जाता था। यह केरल के ऐतिहासिक नगरों में से एक है और इसे भारत के वेनिस होने का दर्जा हासिल है। अलेप्पी भारत के बैकवाटर्स का स्वर्ग माना जाता है। इसकी प्रसिद्धि यहां की सुंदर झीलों और जलमार्गों तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसका एक गहरा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व भी है।

भौगोलिक स्थिति भी है अलग: अलेप्पी की भौगोलिक स्थिति भी इसे भारत का एक विशिष्ट शहर बनाती है। यह ऐतिहासिक शहर अरब सागर के किनारे स्थित है और इसके आस-पास की जमीन नदियों, नहरों, लैगून और झीलों से अटी पड़ी है। इस क्षेत्र को पहले कुट्टनाड के नाम से भी जाना जाता था, जो चावल की खेती और अपने जल परिवहन के लिए सदियों से प्रसिद्ध रहा है।

कम नहीं ऐतिहासिक महत्ता: प्राचीनकाल में यह क्षेत्र केरल के चेर साम्राज्य के अधीन था, तब यहां के राजा जलमार्गों को नियंत्रण करते थे, जो व्यापार के मुख्य साधन थे। दक्षिण भारत के अन्य भागों से मसालों, नारियल और अन्य उत्पादों का आदान-प्रदान इन्हीं जलमार्गों के जरिए होता था। लेकिन 18वीं और 19वीं शताब्दी में अलेप्पी एक प्रमुख बंदरगाह शहर के रूप में विकसित हुआ। जब केरल के प्रमुख बंदरगाह कोंडुगल्लरू में बाढ़ और भू-स्खलन के कारण व्यापार पूरी तरह से बाधित हुआ, तब तत्कालीन त्रावणकोर के राजा मार्तंड वर्मा और उनके उत्तराधिकारियों ने अलेप्पी को नया व्यापारिक केंद्र बनाने का निर्णय लिया। राजा मार्तंड वर्मा और उनके दीवान वेल्लुथंपी की इसमें निर्णायक भूमिका थी। उन्होंने यहां कृत्रिम नहरों और जलमार्गों का जाल बिछवाया ताकि नौकाओं और व्यापारिक जहाजों को यहां प्रवेश में सुविधा हो। यही वह समय था, जब अलेप्पी को भारत का वेनिस कहा जाने लगा। अलेप्पी धीरे-धीरे कपड़ों, मसालों, नारियल और चावल का प्रमुख निर्यातक केंद्र बन गया।

पहचान हैं अनोखी हाउसबोट्स: बैकवाटर्स यानी झीलों, नहरों और समुद्र से बने जलमार्ग, यही तो अलेप्पी की आत्मा है। यहां की प्रमुख झील वेंबनाड झील है, जो भारत की सबसे बड़ी मीठे पानी की झीलों में से एक है। जब अलेप्पी का धीरे-धीरे बैकवाटर्स पर्यटन केंद्र के रूप में विकास होने लगा, तो यहां बड़े पैमाने पर पारंपरिक हाउसबोट, जिन्हें मलयालम भाषा में कैटूवल्लम कहा जाता है, विकसित होने लगे। ये कैटूवल्लम एक जमाने में बड़ा सा जहाज हुआ करता था, जिसने बाद में आधुनिक हाउसबोट का रूप ले लिया। आज अलेप्पी की पहचान इन्हीं हाउसबोट की वजह से है। अलेप्पी के ये हाउसबोट लकड़ी, नारियल की रस्सियों और केले के पेड़ों के पारंपरिक साधनों से बने होते हैं। इनमें अद्भुत स्थानीय कलाकारी को विभिन्न कलाकृतियों के रूप में देखा जा सकता है। अपनी इन्हीं खूबियों के कारण आज अलेप्पी भारत में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लग्जरी पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित हुआ है।

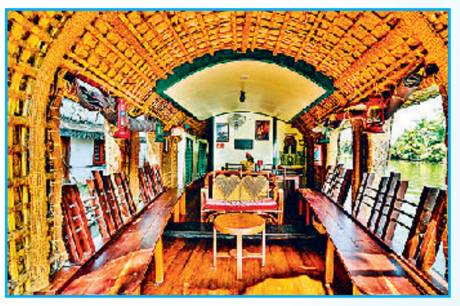

टूरिस्ट सेंटर के रूप में विकसित: सन 1990 के दशक में अलेप्पी को नए सिरे से एक बैकवाटर्स पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किया गया। केरल की सरकार और यहां के स्थानीय लोगों ने पारंपरिक नावों को पर्यटकों के लिए हाउसबोट में बदला और आज अलेप्पी हाउसबोट टूरिज्म, आयुर्वेदिक स्पा, बर्ड वाचिंग और फिशिंग विलेज विजिट जैसी पर्यटन गतिविधियों के लिए पूरी दुनिया में जाना जाता है। अलेप्पी के बैकवाटर्स का अनुभव केवल एक सौंदर्य नहीं बल्कि स्थानीय जीवनशैली, भोजन, जल परिवहन और प्रकृति के संतुलन को महसूस कराने वाली संस्कृति है। इसीलिए अलेप्पी को केरल के बैकवाटर्स का स्वर्ग कहते हैं। *

होता है हर वर्ष बोट्स रेस का आयोजन

हर साल अगस्त माह में यहां पुनमड़ा झील में नेहरू ट्रॉफी बोट रेस आयोजित होती है, जिसमें सैकड़ों लोग चुंदवल्ली यानी सांप जैसी मुंह वाली लंबी नावों पर सवार होकर रेस में शामिल होते हैं। यह रेस केवल खेल नहीं होती बल्कि केरल की समृद्ध संस्कृति का एक अनोखा उत्सव है। यह रेस 1952 में भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की यहां यात्रा के दौरान आरंभ हुई थी।

हाल में ही कश्मीर स्थित चिनाब नदी पर बने चिनाब ब्रिज की डिजाइन और तकनीकी विशेषताओं ने इसे दुनिया भर में चर्चा का विषय बना दिया है। इस ब्रिज की विशेषताओं पर एक नजर।

इंजीनियरिंग का नायाब नमूना चिनाब ब्रिज

अचीवमेंट / सुनील कुमार महला

हाल ही में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जम्मू-कश्मीर में नवनिर्मित चिनाब पुल का उद्घाटन किया। यह (चिनाब पुल) दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे पुल है।

ब्रिज की खासियतें: चिनाब ब्रिज स्टील और कंक्रीट से बना आर्च ब्रिज है, जो रियासी जिले के बक्कल और कौरी गांवों को जोड़ता है। इसकी सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह नदी के तल से 359 मीटर (लगभग 1,178 फीट) ऊंचा है। यानी यह पेरिस के मशहूर एफिल टॉवर से 35 मीटर और दिल्ली की कुतुब मीनार से करीब 5 गुना ऊंचा यानी कि 287 मीटर ऊंचा है। यह 266 किमी प्रति घंटे तक की हवा की गति का सामना कर सकता है। यह ब्रिज भूकंपीय क्षेत्र पांच में स्थित है इसलिए इसे इतना मजबूत बनाया गया है कि रिक्टर स्केल पर 8 तीव्रता के भूकंप को भी सहने में सक्षम है। यही नहीं इसे 40 टन टीएनटी के बराबर विस्फोट सहने में सक्षम बनाया गया है। इसमें ऐसे खास जंगरोधपेंट का इस्तेमाल किया गया है, जो इसे 20 साल तक जंग से बचाएगा। पुल में ऐसी तकनीक स्थापित की गई है कि कोई भी खतरा होने पर वार्निंग अलार्म खुद ही बजने लगेगा। पुल में 112 सेंसर लगाए गए हैं, जो हवा की गति, टेंपरेचर और कंपन आदि की जानकारी देंगे।

चिनाब ब्रिज : दुनिया का सबसे बड़ा आर्च ब्रिज

सवा सौ साल है उम्र: 1315 मीटर लंबा यह ब्रिज, उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेलवे लिंक (272 किमी.) प्रोजेक्ट का हिस्सा है। इस पुल का निर्माण 1486 करोड़ की लागत से किया गया है। इस ब्रिज की नींव 2003 में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने रखी थी। इसके निर्माण में 22 साल लगे और इसकी अनुमानित उम्र 120-125 साल है।

निर्माण में प्रयुक्त सामग्री: जानकारी के मुताबिक, इस ब्रिज को बनाने में 28,660 से 30,000 मीट्रिक टन स्टील का इस्तेमाल किया गया है। इसके साथ ही 46,000 क्यूबिक मीटर कंक्रीट का भी यूज हुआ है। इसके निर्माण में 6 लाख से ज्यादा नट बोल्ट भी यूज किए गए हैं। यह भी काबिले-तारीफ है कि इस पुल को बनाने में नदी के प्रवाह में अवरोध नहीं पहुंचाया गया है, नदी में कोई पिलर नहीं लगाया गया है, बल्कि इसे आर्च तकनीक से बनाया गया है। इस पुल को किसी हमले से बचाने के लिए ब्लास्ट प्रूफ स्टील से तैयार किया गया है। इस ब्रिज के निर्माण में डीआरडीओ की अचूक प्लानिंग शामिल रही है। इसे बनाने के लिए उत्तर रेलवे के साथ कोंकण, अफकान और केआरसीएल ने काम किया। इसके साथ ही भारतीय भौगोलिक सर्वेक्षण जैसी संस्थाएं भी जुड़ी रहीं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इसमें आईआईटी रुड़की और आईआईटी दिल्ली ने भी अपना योगदान दिया है।

कई तरह से महत्वपूर्ण: यह अनोखा पुल न सिर्फ कश्मीर घाटी को पूरे भारत से जोड़ेगा, बल्कि क्षेत्र में व्यापार, पर्यटन और औद्योगिक विकास को भी नई गति देगा। चिनाब ब्रिज, दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे आर्च ब्रिज है। चिनाब रेलवे ब्रिज को बनाने में भले ही 22 साल लगे हों, लेकिन अब इसके शुरू होने के बाद कश्मीर घाटी और जम्मू के बीच सीधा रेल रास्ता बन जाएगा। यह पहली बार होगा जब लोग कन्याकुमारी से सीधे ट्रेन के जरिए कश्मीर घाटी तक जा सकेंगे। यह ब्रिज भी अपने आप में एक आकर्षक टूरिस्ट डेस्टिनेशन बन गया है। इससे देश की सैन्य ताकत को भी कहीं न कहीं सपोर्ट मिलेगा, क्योंकि बर्फबारी के दिनों में कई बार कश्मीर से संपर्क कट जाता था। साथ ही कई क्षेत्रों में आपात स्थिति में सेना को अपनी मूवमेंट में इस बर्फबारी के समय काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता था। अब चिनाब रेलवे ब्रिज के निर्माण से हर मौसम में कश्मीर पहुंचना सेना के लिए आसान हो जाएगा। साथ ही जम्मू-कश्मीर आने वाले पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र होगा यह अनोखा चिनाब ब्रिज। *

पास में है अनोखा अंजी ब्रिज

6 जून 2025 को ही चिनाब पुल का उद्घाटन करने के बाद प्रधानमंत्री ने इसी रेल ट्रैक पर बने अंजी ब्रिज का भी लोकार्पण किया। यह देश का पहला ऐसा रेलवे ब्रिज है, जो केबल स्टेंड तकनीक पर बना है। रिपोर्ट्स के अनुसार यह पुल नदी तल से 331 मीटर की ऊंचाई पर बना है। 1086 फीट ऊंचा एक टावर इसे सहारा देने के लिए बनाया गया है, जो करीब 77 मंजिला बिल्डिंग जितना ऊंचा है। यह ब्रिज अंजी नदी पर बना है, जो रियासी जिले के कटरा को बनिहाल से जोड़ता है। चिनाब ब्रिज से इसकी दूरी महज 7 किमी है। इस पुल की लंबाई 725.5 मीटर है। इसमें से 472.25 मीटर का हिस्सा केबल्स पर टिका हुआ है।

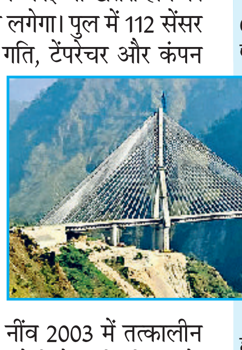

शारीरिक-आर्थिक सेहत सुधारे सेब

उपयोगी पेड़ / वीना गौतम

भारत में सेब अभिजात्य फलों में से एक माना जाता है। डॉक्टर भी हर किसी को, रोगों से बचने के लिए रोज एक सेब खाने की सलाह देते हैं। सेब के स्वास्थ्य संबंधी फायदों की वजह से इसकी मांग हमेशा, हर मौसम में बनी रहती है। यही कारण है कि सेब प्रायः महंगा ही बिकता है। जाहिर है, सेब की खेती आर्थिक दृष्टि से किसानों के लिए भी बहुत फायदेमंद होती है।

कहां होती है सेब की खेती: भारत में सेब के पेड़ मुख्यतः पर्वतीय और ठंडी जलवायु वाले इलाकों में उगते हैं। लेकिन जलवायु परिवर्तन और कृषि क्षेत्र में हुए तमाम तकनीकी उन्नति के कारण अब सेब मैदानी राज्यों में भी किसानों द्वारा उगाया जा रहा है। देश में पारंपरिक रूप से सेब का उत्पादन हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, उत्तराखंड, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड और सिक्किम जैसे राज्यों के ऊंचाई वाले क्षेत्रों में सदियों से होता रहा है। लेकिन अब हिमालय से सटे मैदानी राज्यों जैसे- पंजाब, हरियाणा और मध्य प्रदेश के कुछ जिलों में भी सेब की कुछ प्रजातियां उगाई जा रही हैं।

सेहत के लिए गुणकारी: सेब में कई तरह के विटामिन्स, मिनरल्स, एंटीऑक्सीडेंट्स पाए जाते हैं। यह अनेक रोगों से बचाता है और शरीर को पोषण देता है। कहावत भी है कि रोज एक सेब खाइए, रोगों से दूर रहिए।

किसानों के लिए फायदेमंद: सेब एक नकदी फसल है। यह किसान के लिए ही आर्थिक सहायता नहीं पहुंचाता, बल्कि आम कृषि मजदूरों के लिए भी रोजगार के अवसर पैदा करता है। सेब की बागवानी में पौधा रोपण से लेकर उसकी कटाई, छंटाई, ग्रेडिंग, पैकिंग और परिवहन तक में कई लोगों को रोजगार मिलता है।

अनुमानित आमदनी: सेब का बगीचा 5 से 7 साल में फल देना शुरू कर देता है। सेब के एक पेड़ से किसान को हर साल 100 से 200 किलो फल मिल जाते हैं। औसतन एक हेक्टेयर सेब का बगीचा हर साल लगभग 15 टन उपज देता है, जिससे किसान को सारे खर्च निकालकर 10 से 15 लाख रुपए तक का फायदा हो सकता है। लेकिन इसके लिए पहले किसान को हर साल सेब के बगीचे में 4 से 5 लाख रुपए खर्च करने पड़ते हैं। बाजार चाहे कितना भी डाउन हो, सेब की खेती किसानों को फायदा ही पहुंचाती है। *

बुरे सपनों को दूर रखे लकी चार्म ड्रीम कैचर

रोचक / शिखर चंद जैन

आपने गिफ्ट शॉप, ऑनलाइन शॉपिंग साइट्स या छोटे बच्चों के पालने पर लगे ड्रीम कैचर्स जरूर देखे होंगे। यह एक छोटा सा वृत्ताकार फ्रेम (हूप) होता है, जिसमें मकड़ी के जाल की तरह धागों से बुनी हुई आकृति होती है, कुछ मोती होते हैं और पंख (फेदर्स) लटक रहे होते हैं। यह सिर्फ सजावट की वस्तु नहीं है, इसे वास्तुशास्त्र में भी महत्वपूर्ण माना जाता है।

कैसे हुई शुरुआत: ड्रीम कैचर का आविष्कार करने का श्रेय अमेरिकी जनजाति ओजिब्वे (चिप्पेवा) के लोगों को जाता है। इस जनजाति के लोग कनाडा और नॉर्थ अमेरिका के कुछ क्षेत्रों में रहते हैं। ओजिब्वे जनजाति के लोगों की मान्यता थी कि उनके सभी बच्चों और बड़ों की सुरक्षा असिबाइकाशी नामक एक रहस्यमयी स्पाइडर वूमेन करती है। जब इस जनजाति के लोगों की आबादी बढ़ने लगी और वे दूर-दूर तक जाकर रहने लगे, तो असिबाइकाशी ने स्पाइडर वेब के साथ एक जादुई यंत्र/ताबीज तैयार किया और अपने-अपने परिवार के सदस्यों की सुरक्षा के लिए ओजिब्वे समुदाय की महिलाओं को भी यह यंत्र बनाना सिखाया। उस यंत्र को ही आज वास्तु और फेंगशुई की दुनिया में 'ड्रीम कैचर' के नाम से जाना जाता है।

तेजी से हुआ पॉपुलर: ओजिब्वे जनजाति के लड़के और लड़कियों के विवाह में अन्य वस्तुओं के साथ ड्रीम कैचर्स का भी आदान-प्रदान किया जाने लगा। नतीजतन ड्रीम कैचर का प्रचलन दूसरी जनजातियों, जैसे लकोटा जनजाति आदि में भी बढ़ने लगा। धीरे-धीरे ड्रीम कैचर विभिन्न अमेरिकी जातियों/समुदायों के साथ-साथ अन्य सभ्यताओं-संस्कृतियों में भी लोकप्रिय होने लगा।

ड्रीम कैचर के पार्ट्स: ड्रीम कैचर में मुख्य रूप से एक वृत्त, धागों से बुना जाल, बीड और फीदर्स होते हैं। हर तत्व का अपना महत्व और प्रतीक है।

जीवन चक्र का प्रतीक वृत्त (हूप): यह हमारे जीवन चक्र का प्रतीक माना जाता है। यह भी मान्यता है कि यह वृत्त सूर्य और चंद्र का प्रतिनिधित्व करता है।

बुरे सपनों को ट्रैप करता जाल (वेब): जैसे मकड़ी अपने जाल में शिकार फंसा लेती है, वैसे ही ड्रीमकैचर का वेब बुरे सपनों को जाल में फंसा लेता है। बीचों-बीच जो छेद होता है, वह अच्छे सपनों के प्रवेश द्वार की तरह काम करता है।

सपनों की सीढ़ी पंख (फेदर): ड्रीम कैचर में लगे पंख को अच्छे सपनों का वाहक या अच्छे सपनों की सीढ़ी माना जाता है। आजकल पक्षियों के पंख के स्थान पर जेमस्टोन भी लगाए जाते हैं।

मकड़ी और बुरे सपने हैं बीड: ड्रीम कैचर के बीच में लगा सिंगल बीड मकड़ी का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि इसके इर्द-गिर्द लगे मल्टीपल बीड्स पकड़े गए बुरे सपनों के प्रतीक होते हैं।

लकी चार्म बना ड्रीम कैचर: आज दुनिया के कई देशों में ड्रीम कैचर को माइंडफुलनेस, सुरक्षा और सकारात्मकता के प्रतीक के रूप में सजाया जाता है। लोगों के लिए एक लकी चार्म है ड्रीम कैचर। *

बारिश के मौसम में रिमझिम फुहारों से हर किसी का मन खिल उठता है। इस सुहाने मौसम में काले-काले बादलों से झरती बारिश की बूंदों से भीगी कई यादगार हिंदी फिल्में और कर्णप्रिय गीत कभी भुलाए नहीं जा सकते। ऐसी ही कुछ फिल्मों और सदाबहार गानों पर एक नजर।

फिल्मों-गीतों को खूब भिगोया बारिश की रिमझिम फुहारों ने

सिने जगत / चेतना झा

अपने शुरुआती दौर से ही हिंदी सिनेमा ने बरसात के मौसम की खूबसूरती को पर्दे पर तरह-तरह से पेश किया है। कई फिल्मों के नाम और उनकी कहानी के प्लॉट में बरसात शामिल रही है तो अनेक फिल्मों में बारिश से जुड़े गीतों ने दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया। उम्मीदों की बारिश हो या प्रेम का इजहार, बरसात को पर्दे पर दिखाया गया है तो विरह के गीत के लिए भी सावन-भादो का सहारा लिया गया है। खासतौर पर प्रेमी जोड़ों को भिगोने वाले रोमांस के लिए बरसात का मौसम बॉलीवुड में सबसे मुफीद माना जाता रहा है।

'आज रपट जाएं' गाने के एक दृश्य में अमिताभ और स्मिता पाटिल

पर्दे के बाहर मचलता मन: कभी मशीनी बारिश में शिफॉन की साड़ी पहन कर अपने नृत्य से नायिका के गीत चर्चित हुए तो कभी वास्तविक बारिश में मुंबई की सड़कों पर 'रिमझिम गिरे सावन' जैसे यादगार गीत फिल्माए गए। आज सोशल मीडिया के दौर में बहुत से यंगस्टर्स ऐसे गीतों को रिक्रिएट कर रील्स बनाने के लिए खूब उतावले दिखते हैं। यही तो जादू है बॉलीवुड फिल्मों की बारिश का। नायक-नायिकाओं की प्यार भरी तकरार, इंकार और फिर इजहार की अनगिनत दास्तानें टिप-टिप बारिश के बीच इतने दिलकश अंदाज में फिल्माई जाती रही हैं कि रियल लाइफ में भी कुछ लोग इन्हें खुद अनुभव करने के लिए मचल उठते हैं।

गीतों में उम्मीद-मिलन-विरह: 'पुरवा के झोंकवा से आयो रे संदेसवा कि चल आज देसवा की ओर' हो या 'घनन-घनन घिर आए बदरा...' फिल्मों में भी मानसूनी बादल, उम्मीद-उत्साह का संचार भरपूर करते हैं। 'तुम्हें गीतों में ढालूंगा, सावन को आने दो...' 'मौसम है आशिकाना, ऐ दिल कहीं से उनको ऐसे में ढूंढ लाना...' मिलन और उम्मीद की बूंदों से भीगे ऐसे बेशुमार गाने सिनेप्रेमियों के पसंदीदा गीतों में शामिल हैं। फिल्मों में बारिश का सावन का महीना, न केवल मिलन के गीत गाता है, बल्कि विरह की तान भी छेड़ता है। याद आता है, मोहम्मद रफी का वह गीत, 'अजहू न आए बालमा, सावन बीता जाए।'

बरसात पर केंद्रित फिल्में: कई फिल्में तो बरसात को केंद्र में रखकर ही फिल्माई गईं। कई फिल्मों के नाम ही बरसात और बरसात के प्रमुख महीने सावन से जुड़े हुए हैं। शुरुआत 1945 में आई मोतीलाल और शांता आप्टे की फिल्म 'सावन' से हुई। 1949 में आई राजकपूर की फिल्म 'बरसात' ने तो तय कर दिया कि बरसात फिल्मों की सफलता का अचूक मंत्र है। बाद में बरसात नाम की दो फिल्में और बनीं। इन दोनों के नायक बॉबी देओल थे। 1960 में भारत भूषण और मधुबाला की 'बरसात की रात' आई। 1981 में अमिताभ बच्चन और राखी की हिट जोड़ी से सजी 'बरसात की एक रात' रिलीज हुई। 'बरखा बहार' फिल्म में भी बारिश का रोमांटिक अंदाज नजर आया था। 'मानसून वेडिंग' नाम से भी एक फिल्म काफी चर्चित हुई थी। 'तुम मिले', 'लगान', 'आया सावन झूम के', 'प्यासा सावन', 'सावन की घटा', 'सोलहवां सावन', 'सावन के गीत', 'प्यार का पहला सावन', 'सावन का महीना', 'सावन को आने दो', 'सावन-भादो', इस श्रंखला में कई फिल्में शामिल हैं।

ये गीत भी हैं यादगार: 'प्यार हुआ इकरार हुआ ...' राजकपूर और नरगिस का बारिश के दौरान एक छतरी के नीचे चलते हुए यह गीत गाना, उस जमाने के रोमांस की शायद पराकाष्ठा ही थी। फिल्म 'श्री 420' का यह गाना आज भी मन को प्यार की भावना से भिगो देता है। बरसात, प्रेमियों के लिए कितनी कीमती होती है, यह सरेआम बयां किया फिल्म 'रोटी कपड़ा और मकान' के एक गीत में जीनत अमान ने। जब वो दो टकिए की नौकरी के पीछे लाखों का सावन कुर्बान होने की शिकायत करती हैं। यह जीनत के इस गाने से जाहिर होता है कि 'हाय-हाय ये मजबूरी, ये मौसम और ये दूरी' आज भी कई लोगों को नून-तेल-हल्दी के फेर में गुम हो रहे रोमांस की याद दिला जाता है। इसी तरह मधुबाला और भारत भूषण पर फिल्माया गाना 'जिंदगी भर नहीं भूलेगी वो बरसात की रात' को भी नहीं भुलाया जा सकता है। इसी तरह 'चांदनी' फिल्म का गाना 'लगी आज सावन की फिर वो झड़ी है', आज भी दिल को तरंगित कर जाता है।

माना गया हिट फॉर्मूला: दर्शकों द्वारा बारिश पर फिल्माए गीतों को पसंद किए जाने की वजह से कई फिल्मों में तो हिट फार्मूले की तरह बारिश के गाने को फिल्मों में जबर्दस्ती शामिल किया गया। याद कीजिए अमिताभ बच्चन और स्मिता पाटिल पर फिल्माया गया 'नमक हलाल' फिल्म का गाना, 'आज रपट जाएं तो हमें न उठइयो..', जो सुपरहिट रहा था। इसी तरह फिल्म 'गुरु' में 'बरसो रे मेघा...' गाने पर ऐश्वर्या राय ने बेहद दिलकश नृत्य किया था। बरसात के सीन पर फिल्माए ऐसे फेमस गीतों में 'दिल तो पागल है' का गाना 'कोई लड़की है, जब वो हंसती है, बारिश होती है...' फिल्म 'मोहरा' का गाना 'टिप-टिप बरसा पानी', 'फना' का गाना 'ये साजिश है बूंदों की' भी शामिल हैं। इसी कड़ी में याद आता है '1942 ए लव स्टोरी' का गाना 'रिम-झिम रिम-झिम, रुम-झुम रुम-झुम...' कहने का सार है कि बारिश की फुहारों ने हिंदी फिल्मों और गानों को खूब भिगोया है। *